mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-05 अंक-99 | पृष्ठ-8 | मूल्य-3 रूपये

सतना
12 अप्रैल 2025 शनिवार

दैनिक मीडियाऑडीटर

सतना, रीवा से एक साथ प्रकाशित

ओलंपिक से 75...
@ पेज 7

संक्षिप्त समाचार

शहबाज के सामने झुके इमरान खान

पेशावर (एजेंसी)। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री मौजूदा पीएम शहबाज शरीफ के आगे आखिरकार झुकने को मजबूर हो गए हैं। यह दावा तहरीक-ए-इंसाफ के वरिष्ठ नेता जुनैद अकबर ने किया है। जुनैद ने कहा है कि पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान पाकिस्तान की सरकार या किसी भी संस्था के साथ सुलह वार्ता करने के लिए तैयार हैं, लेकिन उन्हें बंदूक दिखाकर मजबूर नहीं किया जा सकता है। बता दें कि इमरान खान करीब 2 साल से जेल में बंद हैं। उन पर कई तरह के मुकदमे चल रहे हैं।

इमरान खान की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी के नेता अकबर ने बृहस्पतिवार को मीडिया से बातचीत में कहा कि पूर्व प्रधानमंत्री ने स्पष्ट कर दिया है कि वह संविधान और कानून की शुचिता के लिए किसी से भी बात करने को तैयार हैं, लेकिन उन्हें बंदूक दिखाकर मजबूर नहीं किया जा सकता। खान अगस्त 2023 से रावलपिंडी की अडियाला जेल में बंद हैं। अप्रैल, 2022 में उनकी सरकार गिराये जाने के बाद उनके खिलाफ कई मामले दर्ज किए गए हैं। अकबर ने कहा, ''हमारे दरवाजे बातचीत के लिए हमेशा खुले हैं, लेकिन अगर कोई यह सोचता है कि खान साहब और हमारे कार्यकर्ताओं के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर और उन्हें जेल भेजकर वह अपनी इच्छा जबरन हमारे ऊपर थोपेगा, तो यह उनका भ्रम है।'' अकबर ने यह भी कहा कि संस्थाओं को अपने कानूनी दायरे में रहकर ही काम करना चाहिये और ऐसा ही राजनीतिक दलों को भी करना चाहिये। उन्होंने कहा, ''हम संविधान और कानून को बनाए रखने के लिए सरकार अथवा संस्थाओं से बातचीत करने के लिए तैयार हैं।''

क्षिण कोरिया के अपदस्थ राष्ट्रपति ने खाली किया अपना आधिकारिक आवास

सियोल (एजेंसी)। दक्षिण कोरिया के अपदस्थ राष्ट्रपति यून सुक येओल ने अपना आधाकारिक आवास खाली कर दिया है। उन्हें एक मामले में

महाभियोग के जरिये पदच्युत किया गया था। वह अदालत से जमानत पर हैं। दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यून सुक येओल ने शुक्रवार को सियोल स्थित अपना आधिकारिक आवास छोड़ा तो उनके समर्थक काफी भावुक हो गए। राष्ट्रपति के साथ उनके 11 कुत्ते और बिल्लियों को भी घर छोड़ना पड़ गया। राष्ट्रपति ने यह कदम दिसंबर में मार्शल लॉ लागू करने के फैसले के कारण संवैधानिक न्यायालय द्वारा पद से हटाए जाने के एक सप्ताह बाद उठाया है। विद्रोह के आरोपों पर आपराधिक मुकदमे का सामना कर रहे यून को मार्च में सियोल की एक अदालत द्वारा उनकी गिरफ्तारी रद्द किये जाने के बाद हिरासत से रिहा कर दिया गया था। यून और उनकी पत्नी किम किऑन अपने पालतू 11 कुत्तों और बिल्लियों के साथ दक्षिणी सियोल स्थित अपने निजी अपार्टमेंट में चले गए हैं। यून की काली वैन जैसे ही राष्ट्रपति परिसर के गेट के निकट पहुंची, वह वैन से बाहर निकले, मुस्कुराते हुए अपने समर्थकों की ओर हाथ हिलाया, कुछेक से हाथ मिलाया और कुछ को गले लगाया, फिर वापस गाड़ी में सवार होकर वहां से चले गए। निजी आवास पहुंचने पर भी यून ने वहां मौजूद समर्थकों को निराश नहीं किया और कुछ दूर पहले ही वाहन से उतरकर समर्थकों की भीड़ के बीच से धीरे-धीरे आगे बढ़े, उनसे हाथ मिलाया। यून की पत्नी भी उनके पीछे-पीछे चल रही थीं।

दिल्ली के बिजनेसमैन ने की अपनी पत्नी की हत्या, नाले में फेंका शव

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के बिजनेसमैन ने की अपनी पत्नी की हत्या, नाले में फेंका शव, पुलिस ने नोज पिन से सुलझाई हत्या की गुत्थी राजधानी दिल्ली में एक महिला की मौत के मामले की जांच कर रही पुलिस के लिए एक नोज पिन यानी नाक की पिन अहम सुराग साबित हुई है। राजधानी दिल्ली में राजधानी दिल्ली में बीते दिनों एक महिला का शव नाले में मिला था। घटना 15 मार्च की है, जब नाले में एक शव चादर में लपेटा हुआ और पत्थर और सीमेंट की बोरी से बांधा हुआ पाया गया। इस दौरान पुलिस के लिए जांच को आगे बढ़ाने में मुश्किल हो रही थी और महिला के शव की पहचान नहीं हो पा रही थी। इस दौरान पुलिस ने महिला की नोज पिन के जरिए महिला की पहचान की और इस हत्या की गुत्थी को सुलझाने में पुलिस को मदद मिली। इस मामले में पुलिस ने महिला के व्यवसायी पति अनिल कुमार को गिरफ्तार कर लिया है।

दरअसल पुलिस ने जब महिला के शव को बरामद किया तो उसकी पहचान कर पाना सबसे मुश्किल था। इस दौरान महिला की नोज पिन के जरिए पुलिस ने सुराग का पता लगाना शुरू किया तो पुलिस को पता चला कि दिल्ली एक ज्वेलरी स्टोर से उस नोज पिन को खरीदा गया था। जब पुलिस ने रिकॉर्ड की जांच की तो पता चला कि नोज पिन दिल्ली के एक प्रॉपर्टी डीलर अनिल कुमार ने खरीदी थी, जो गुरुग्राम के एक फार्महाउस में रहता था। बिल उसके नाम पर जारी किया गया था। इसी के आधार पर जब पुलिस ने आगे जांच की तो महिला की पहचान 47 वर्षीय सीमा सिंह के रूप में हुई। दरअसल जब पुलिस ने अनिल कुमार से संपर्क किया तो पता चला कि सीमा सिंह उनकी पत्नी है। जब अधिकारियों ने अनिल कुमार से अपनी पत्नी से बात कराने के लिए कहा तो अनिल कुनार ने कहा कि उनकी पत्नी बिना फोन के ही वृंदावन गई हैं। इससे पुलिस को शक हुआ। इसके बाद पुलिस द्वारका में स्थित अनिल कुमार के दफ्तर पहुंची, जहां उन्हें एक डायरी में उनकी सास का नंबर मिला। परिवार से संपर्क करने पर मृतका की बहन बबीता ने बताया कि 11 मार्च के बाद से ही उनकी बात सीमा से नहीं हुई है और उनका परिवार इसे लेकर परेशान है।

दिल्ली में धूलभरी आंधी

15 उड़ानों का बदला गया रूट, कई वाहन हुए क्षतिग्रस्त

नई दिल्ली (एजेंसी)। राजधानी दिल्ली में शुक्रवार को धूल भरी आंधी देखने को मिली। इस बीच दिल्ली हवाई अड्डे पर धूल भरी आंधी और तेज हवाओं के कारण कुल 15 उड़ानों का रूट बदल दिया गया और कई उड़ाने देरी से शुरू हुई। बता दें कि दिल्ली के मौसम में हुए अचानक बदलाव के कारण आईटीओ इलाके में एक बिजली का खंभा बीच सड़क पर गिर गया। इस कारण सड़क पर लंबा जाम लग गया और यातायात प्रभावित हुआ। वहीं दिल्ली के सराय रोहिल्ला इलाके में धूलभरी आंधी के कारण कई पेड़ उखड़कर गिर गए, इस कारण कई वाहन क्षतिग्रस्त हो गए हैं।

बता दें कि इससे पहले राजधानी दिल्ली में गुरुवार को भी धूलभरी आंधी देखने को मिली थी। इसके बाद दिल्ली का मौसम सुहाना हो गया था। वहीं हल्की फुल्की बारिश भी देखने को मिली। बता दें कि मौसम विभाग की ओर से बीते दिनों पूर्वानुमान जारी किया गया था, जिसके मुताबिक दिल्ली में बारिश होने की संभावना जताई गई थी। बता

दें कि गुरुवार को गाजियाबाद में भी तेज आंधी और बारिश देखने को मिली थी। वहीं गुरुवार की शाम को राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में धूलभरी आंधी चली, जिसका वीडियो भी सामने आया था। बता दें कि गुरुवार को हुई हल्की बारिश के बाद से दिल्ली का मौसम सुहाना हो गया था।

राजधानी दिल्ली में बारिश और धूलभरी आंधी को लेकर मौसम विभाग ने पहले ही जानकारी साझा कर दी थी। मौसम विभाग ने 10 और 11 अप्रैल को बारिश का अनुमान लगाया है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग (ढ्ढरूष्ठ) के अनुसार, गुरुवार को दिल्ली का न्यूनतम तापमान 25.9 डिग्री सेल्सियस रहा, जो इस मौसम के औसत से 5.9 डिग्री अधिक है।

बुधवार को दिल्ली में इस मौसम की सबसे गर्म रात दर्ज की गई, जब न्यूनतम तापमान 25.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। बारिश के साथ, शहर को चल रही गर्मी से राहत मिलेगी। सोमवार से दिल्ली का तापमान 40 डिग्री सेल्सियस से ऊपर है।

अपूर्वा मखीजा और रणवीर अलाहाबादिया की बढ़ सकती हैं मुश्किलें

मुंबई (एजेंसी)। इंडियाज गॉट लेटेंट मामले में महाराष्ट्र साइबर सेल का कहना है कि यूट्यूबर अपूर्वा मखीजा और रणवीर अलाहाबादिया सहयोग नहीं कर रहे हैं। महाराष्ट्र साइबर सेल का कहना है कि उनके द्वारा समन का जवाब नहीं दिया जा रहा है। दरअसल महाराष्ट्र साइबर सेल ने पूछताछ के बाद जांच के लिए हाजिर होने के संदर्भ में समय रैना, आशीष चंचलानी, अपूर्वा मखीजा और रणवीर अलाहाबादिया को पूछताछ के लिए समन भेजा था। इस समन के बाद केवल समय रैना और आशीष चंचलानी ही साइबर सेल के सामने हाजिर हुए थे। वहीं महाराष्ट्र के साइबर सेल द्वारा दिए गए समन का रणवीर अलाहाबादिया और अपूर्वा मखीजा ने कोई जवाब नहीं दिया है। इसलिए महाराष्ट्र साइबर पुलिस उनके खिलाफ लीगल एक्शन भी ले सकती है। बता दें कि इससे पूर्व अपूर्वा मखीजा और रणवीर अलाहाबादिया ने दावा किया था कि सोशल मीडिया और अन्य प्लैटफॉर्म्स पर उन्हें धमकी भरे मैसेज भी आ रहे हैं।

BJP-AIADMK गठबंधन का ऐलान, तमिलनाडु चुनाव में भाजपा को फायदा

अमित शाह ने बताया गठबंधन का फॉर्मूला

पश्चिम बंगाल (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी और अन्नाद्रमुक यानी AIADMK आगामी तमिलनाडु विधानसभा चुनाव एक साथ मिलकर लडेंगे। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को इस बात का ऐलान कर दिया है। अमित शाह ने इस बात की घोषणा करते हुए कहा है कि तमिलनाडु में फिर से हृष्ठ की सरकार बनेगी। विधानसभा चुनाव में प्रचंड बहुमत से NDA की जीत होगी। उन्होंने कहा है कि NDA पलानीसामी के नेतृत्व में चुनाव लड़ेगी। भाजपा और AIADMK की संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस में अमित शाह और पलानीस्वामी मंच पर मौजूद थे। अमित शाह ने कहा- ÷आज AIADMK और BJP ने तय किया है कि आने वाला चुनाव, AIADMK, BJP और बाकी दल, NDA के तहत मिलकर लड़ेगी। ये चुनाव में राष्ट्रीय स्तर पर PM मोदी के नेतृत्व में और राज्य में पलानीस्वामी के नेतृत्व में लड़ा जाएगा। मुझे भरोसा है कि आने वाले चुनाव में हृष्ठ की सरकार बनेगी। AIADMK के इंटरनल अफेयर्स में हमारा कोई दखल नहीं होगा। बाकी दलों के बारे में AIADMK का नेतृत्व और BJP का क्षेत्रीय नेतृत्व तय करेगा। सीटों की संख्या और सरकार बनाने के बाद मंत्रियों को बंटवारा दोनों ही दल चर्चा

करके तय करेंगे। अभी कोई बातचीत नहीं हो रही है।÷ अमित शाह ने आगे कहा- ÷DMK तमिलनाडु में सनातन धर्म, लैंग्वेज पॉलिसी जैसे मुद्दों को, मूल मुद्दों से ध्यान हटाने के लिए उठा रही है। तमिलनाडु में जनता करप्शन, लॉ एंड आर्डर, दलित और महिलाओं पर अत्याचार के खिलाफ जनता वोट करेगी।÷

तहव्वुर राणा को भरे चौक में फांसी देने की मांग

आदित्य ठाकरे बोले- कोई समझौता न हो

मुंबई (एजेंसी)। भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई में साल 2008 में हुए आतंकी हमले के एक बड़े आरोपी तहव्वुर राणा को भारत प्रत्यर्पित कर लिया गया है। राणा को विशेष विमान के जरिए गुरुवार को अमेरिका से भारत लाया है। उसके प्रत्यर्पण को भारत की बड़ी जीत बताया जा रहा है। तहव्वुर राणा को हृ्छ की कस्टडी में रखा गया है। वहीं, अब तहव्वुर राणा के प्रत्यर्पण पर राजनीतिक दलों का रिएक्शन भी सामने आ रहा है। इसी क्रम में शिवसेना यूबीटी के नेता और उद्धव ठाकरे के बेटे आदित्य ठाकरे ने तहव्वुर राणा को भरे चौक में फांसी देने की मांग की है।

शिवसेना यूबीटी के नेता आदित्य ठाकरे ने 26/11 मुंबई आतंकी हमलों के आरोपी तहव्वुर राणा को अमेरिका से भारत लाए जाने पर बड़ा बयान दिया है। आदित्य ठाकरे ने कहा- ÷तहव्वुर राणा को भरे चौक में फांसी दी जाए। इस पर कोई समझौता नहीं होना चाहिए। दुनिया को संदेश देना चाहिए की आतंक पर भारत कोई समझौता नहीं करता है। मुंबई में आतंकी हमलों के आरोपी तहव्वुर राणा को गुरुवार की रात पालम एयरपोर्ट से

ले जाकर सीधे पटियाला हाउस कोर्ट में पेश किया गया। इसके बाद देर रात तक चली सुनवाई के बाद कोर्ट ने तहव्वुर राणा को 18 दिनों के लिए हृ्छ की कस्टडी में भेज दिया गया। बता दें कि एजेंसी ने राणा की 20 दिन की कस्टडी मांगी थी। 26/11 मुंबई हमलों के आरोपी तहव्वुर राणा के भारत प्रत्यर्पण पर पूर्व वित्त मंत्री और कांग्रेस नेता पी चिदंबरम ने कहा- ÷यह प्रक्रिया 2009 में शुरू हुई और फिर 2011 में इसमें तेजी आई, जब अमेरिकी खुफिया एजेंसियों ने राणा की पहचान की। मैं विदेश मंत्रालय, खुफिया एजेंसियों और हृ्छ को लंबी और कठिन लड़ाई के बाद राणा को सफलतापूर्वक भारत वापस लाने के लिए बधाई देता हूं। मुझे यकीन है कि मौजूदा मोदी सरकार में भी कई विदेश सचिवों और मंत्रियों ने अहम भूमिका निभाई है।

दिल्ली में मेयर के चुनाव की सामने आ गई तारीख

इस चुनाव के लिए नामांकन दाखिल करने की आखिरी तारीख 21 अप्रैल

लखनऊ (एजेंसी)। केंद्रशासित प्रदेश दिल्ली में मेयर और डिप्टी मेयर के चुनाव की तारीख का ऐलान हो गया है। दिल्ली नगर निगम के सचिव की ओर से जारी किए गए नोटिस के मुताबिक, दिल्ली में मेयर और डिप्टी मेयर का चुनाव आगामी 25 अप्रैल की तारीख को आयोजित किया जाएगा। इस चुनाव के लिए नामांकन दाखिल करने की आखिरी तारीख 21 अप्रैल है। मेयर और डिप्टी मेयर का चुनाव 25 अप्रैल को दोपहर 2 बजे एमसीडी की बैठक के दौरान होगा।

दिल्ली नगर निगम के सचिव शिवा प्रसाद की ओर से जारी किए गए नोटिस में लिखा है- ÷दिल्ली नगर निगम की अप्रैल की ऑर्डिनरी बैठक शुक्रवार 25 अप्रैल, 2025 को 2 बजे अरुणा आसफ अली सभागार चौथे तल, ए ब्लॉक, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी सिविक सैन्टर, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, नई दिल्ली में होगी। जिसमें महापौर व

उपमहापौर (मेयर-डिप्टी मेयर) का चुनाव भी होगा। इसे महापौर के आदेश से जारी किया जाता हैं।÷

आम आदमी पार्टी के नेता महेश कुमार खिची वर्तमान में दिल्ली नगर निगम के मेयर हैं। महेश कुमार ने बीते साल नवंबर महीने में भाजपा के किशन लाल को 3 वोटों के छोटे से अंतर से हराकर मेयर का चुनाव जीता था। तब चुनाव में कुल 265 वोटों में से आम आदमी पार्टी के महेश कुमार खिची को 133 वोट और भारतीय जनता पार्टी के किशन लाल को 130 वोट मिले थे। वहीं, 2 वोटों को रद्द कर दिया गया था।

दिल्ली में साल 2022 के दिसंबर में हुए रूष्ठ चुनाव में आम आदमी पार्टी ने जीत हासिल की थी। इसके बाद,्रक्क की शैली ओबेरॉय मेयर चुनी गई थीं। दिल्ली में हर वित्तीय वर्ष के खत्म होने के बाद एक नया मेयर आता है। मेयर के पद पर 5 साल में रोटेशन के आधार पर कार्यकाल बांटा जाता है। पहला साल महिलाओं के लिए, दूसरा साल ओपन, तीसरा साल आरक्षित श्रेणी के लिए और बाकी के दो साल ओपन कैटेगरी के लिए निर्धारित किया गया है।

पूर्व सहकर्मी की बनाई अश्लील तस्वीरें, फर्जी सोशल मीडिया प्रोफाइल बनाकर कर दी अपलोड

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में एक महिला सहकर्मी की आपत्तिजनक तस्वीरों का इस्तेमाल कर एक फर्जी सोशल मीडिया प्रोफाइल बनाने और उसकी जानकारियां पोस्ट करने के आरोप में एक युवक को गिरफ्तार किया गया है। आरोपी की पहचान 27 वर्षीय दिवांशु के रूप में हुई है, जो सुभाष प्लेस के एक रेस्टोरेंट में बारटेंडर के रूप में काम करता था, जहां पीड़ित युवती भी वेट्रेस के रूप में काम करती थी। पुलिस ने बताया कि दोनों के बीच दोस्ती हो गई थी, लेकिन बाद में किसी कारण दोनों की दोस्ती टूट गई थी। बाहरी दिल्ली के डीसीपी सचिन शर्मा ने कहा, ''जब युवती ने दोस्ती खत्म कर दी और दिवांशु को दिसंबर 2024 में नौकरी से निकाल दिया गया, तो उसने महिला के नाम से एक फर्जी सोशल मीडिया प्रोफाइल बनाकर बदला लेने की कोशिश की। दिवांशु ने सोशल मीडिया पर महिला का मोबाइल नंबर और आपत्तिजनक तस्वीरें पोस्ट कर दीं।'' दिल्ली के बाहरी जिले के साइबर पुलिस थाने में 11 मार्च को शिकायत प्राप्त हुई, जिसके बाद सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया। पुलिस ने बताया कि आईपी एड्रेस का पता लगाकर, कॉल डिटेल रिकॉर्ड के विश्लेषण और डिजिटल निगरानी के जरिए टीम ने आरोपी का पता लगाया और छापेमारी कर उसे गिरफ्तार कर लिया। पुलिस अधिकारी ने कहा कि पूछताछ के दौरान आरोपी ने अपना अपराध कबूल कर लिया।

वक्फ कानून को लेकर जमीअत उलमा-ए-हिंद पहुंचा सुप्रीम कोर्ट, कर दी बड़ी मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। वक्फ कानून को लेकर इन दिनों देश में जगह-जगह तूफान सा मचा हुआ है। कई विपक्षी दल और मुस्लिम संगठन इस कानून की खिलाफत कर रहे हैं और शांतिपूर्ण ढंग से प्रदर्शन कर रहे हैं। इसी बीच मुस्लिम संगठन जमीअत

● मौलिक अधिकारों का बताया उल्लंघन

उलमा-ए-हिंद इस मामले को लेकर सुप्रीम कोर्ट पहुंच गई है। बता दें कि इससे पहले ही कई विपक्षी दल और मुस्लिम संगठन सुप्रीम कोर्ट में इस कानून को चुनौती देने पहुंच गए हैं।

सुप्रीम कोर्ट में जमीअत उलमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना सैयद महमूद असद मदनी ने वक्फ (संशोधन) एक्ट 2025 के विरुद्ध पीआईएल दायर की है, जिसमें कानून की संवैधानिकता को चुनौती दी गई है। जानकारी दे दें कि वक्फ कानून को राष्ट्रपति के मुहर के बाद 8 अप्रैल 2025 से देश भर में प्रभावी कर दिया गया है। याचिका में जमीअत ने अपना पक्ष रखते हुए कहा है कि इस कानून में एक नहीं बल्कि भारत के संविधान के कई आर्टिकल्स, विशेष रूप से आर्टिकल 14, 15, 21, 25, 26, 29 और 300-ए के तहत मिले मौलिक अधिकारों का घोर उल्लंघन किया गया है, जो मुसलमानों के धार्मिक और सांस्कृतिक अधिकारों और पहचान के लिए गंभीर खतरा है।

मौलाना मदनी ने आगे पीआईएल में कहा कि यह कानून न केवल असंवैधानिक है बल्कि बहुसंख्यक मानसिकता की उपज है, जिसका उद्देश्य मुस्लिम समाज के सदियों पुराने धार्मिक और कल्याणकारी ढांचे को नष्ट करना है। यह कानून सुधारात्मक पहल के नाम पर भेदभाव का झंडाबरदार है और देश की धर्मनिरपेक्ष पहचान के लिए खतरा है। याचिका में सुप्रीम कोर्ट से मांग की गई है कि वह वक्फ (संशोधन) एक्ट 2025 को असंवैधानिक घोषित करे और इसके क्रियान्वयन पर तुरंत रोक लगाएं।

जानकारी दे दें कि इस मामले में मौलाना मदनी की पैरवी एडवोकेट ऑन रिकॉर्ड मंसूर अली खान कर रहे हैं। जमीअत उलमा-ए-हिंद के कानूनी मामलों के संरक्षक मौलाना और एडवोकेट नियाज अहमद फारूकी ने बताया कि जमीअत उलमा-ए-हिंद ने प्रमुख वरिष्ठ वकीलों से भी राय-मशविरा ली हैं।

मौलाना मदनी ने अपनी याचिका में यह पक्ष रखा है कि इस अधिनियम से देश भर में वक्फ संपत्तियों की परिभाषा, संचालन और प्रबंधन प्रणाली में बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप किया गया है, जो इस्लामी धार्मिक परंपराओं और न्यायिक सिद्धांतों के विपरीत है। याचिका में कहा गया है कि यह संशोधन दुर्भावना पर आधारित हैं जो वक्फ संस्थाओं को कमजोर करने के उद्देश्य से किए गए हैं।

कानून में बताई कमियां: उन्होंने इस कानून की कई कमियों का भी इस याचिका में उल्लेख किया है, जिसमें यह भी शामिल है कि अब केवल वही व्यक्ति वक्फ (संपत्तियों का दान) कर सकता है जो 5 साल से प्रैक्टिसिंग मुसलमान हो। इस शर्त का किसी भी धार्मिक कानून में कोई उदाहरण नहीं मिलता, इसके साथ ही यह शर्त लगाना कि वक्फ करने वाले को यह भी साबित करना पड़ेगा कि उसका वक्फ करना किसी षड्यंत्र का हिस्सा तो नहीं है।

निमाड़ क्षेत्र का पहला 500 एम.व्ही.ए. क्षमता का पॉवर ट्रांसफार्मर ऊर्जीकृत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य प्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी (एमपी ट्रांसको) ने 400 केवी सबस्टेशन जुलवानिया में निमाड़ क्षेत्र का पहला और प्रदेश का तीसरा 500 एम.व्ही.ए. क्षमता का पॉवर ट्रांसफार्मर स्थापित किया है। इसके पहले मध्यप्रदेश में सिर्फ भोपाल में 500 एम.व्ही.ए. क्षमता के दो ट्रांसफार्मर स्थापित हुए हैं। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया कि खंडवा स्थित सिंगाजी सुपर थर्मल पॉवर प्लांट से निमाड़ क्षेत्र को सीधे विद्युत आपूर्ति के लिए 400 केवी सबस्टेशन जुलवानिया में इस ट्रांसफार्मर की व्यवस्था की गई है। उन्होंने बताया कि लगभग 30 करोड़ रुपए की अनुमानित लागत से इस ट्रांसफार्मर को स्थापित कर ऊर्जीकृत किया गया है। इस ट्रांसफार्मर के ऊर्जीकृत होने से न केवल निमाड़ क्षेत्र के कृषि उपभोक्ताओं को अगले रबी सीजन में गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति हो सकेगी बल्कि इस ट्रांसफार्मर के स्थापित होने से क्षेत्र के लिफ्ट इरिगेशन सिस्टम के लिए भी पर्याप्त मात्रा में विद्युत की उपलब्धता रहेगी। ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने इस सफलता के लिए एमपी ट्रांसकों को बधाई दी है। एम पी ट्रांसको के अतिरिक्त मुख्य अभियंता श्री राजीव अग्रवाल ने बताया कि इस ट्रांसफार्मर की ऊर्जीकृत होने से निमाड़ क्षेत्र की विद्युत पारेषण व्यवस्था में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। निमाड़ क्षेत्र में एमपी ट्रांसको अपने 59 एक्स्ट्रा हाईटेंशन सब स्टेशनों के द्वारा विद्युत आपूर्ति करती है। इसमें से 400 के.व्ही. के 4 सबस्टेशन, 220 के.व्ही. के 13 एवं 132 के.व्ही. के 42 सब स्टेशन शामिल है। निमाड़ क्षेत्र की कुल स्थापित क्षमता अब 14 हजार 304 एम.व्ही.ए. की हो गई है। मध्यप्रदेश में एम.पी. ट्रांसको (मध्य प्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी) अपने 417 सब स्टेशनों के माध्यम से विद्युत पारेषण करती है। इस क्षमता .वृद्धि से मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी की कुल ट्रांसफारमेशन क्षमता बढ़कर 81 हजार 911 एम.व्ही.ए. की हो गई है। प्रदेश में एम.पी. ट्रांसको (मध्य प्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी) के कुल 1027 पॉवर ट्रांसफार्मर क्रियाशील है।

उप मुख्यमंत्री शुक्ल ने प्रदेशवासियों को दी हनुमान जयंती की शुभकामनायें

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने हनुमान जयंती के शुभ अवसर पर समस्त प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी हैं। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने कहा कि भगवान श्री हनुमान, शक्ति, भक्ति, साहस, सेवा और समर्पण के प्रतीक हैं। उनका जीवन हमें निष्ठा, अनुशासन और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। प्रभु श्रीराम के प्रति उनकी अटूट भक्ति और निष्काम सेवा प्रत्येक नागरिक के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। उप मुख्यमंत्री श्री शुक्ल ने प्रदेशवासियों के उत्तम स्वास्थ्य, सुख-शांति, समृद्धि एवं कल्याण की कामना की है। उन्होंने भगवान हनुमान से सभी के जीवन में नई ऊर्जा, सकारात्मकता और संकल्प की भावना का संचार करने की प्रार्थना की है।

वित्तीय वर्ष 2024-25 में एम.पी. ट्रांसको के नेटवर्क का उल्लेखनीय विस्तार

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2024-25 में मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी (एम.पी. ट्रांसको) ने ट्रांसमिशन नेटवर्क (पारेषण प्रणाली) को सुदृढता प्रदान करते हुये सिस्टम में उल्लेखनीय विस्तार किया है। कंपनी ने 456 सर्किट कि.मी. की नई एकस्ट्रा हाईटेंशन लाइनों का निर्माण कर उन्हें ऊर्जीकृत किया है, इससे मध्यप्रदेश पॉवर ट्रांसमिशन कंपनी की ट्रांसमिशन लाइनें बढ़कर 42 हजार 520 सर्किट कि.मी. की हो गई है। इस दरम्यान स्थापित ट्रांसफार्मेशन कैपेसिटी (स्थापित क्षमता) में भी पर्याप्त वृद्धि हुई है।

अत्यधिक गर्मी एवं लू से बचने के लिए नागरिक अपनायें सावधानियां

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री राजेन्द्र शुक्ल ने राज्य में बढ़ती गर्मी और लू की गंभीरता को देखते हुए नागरिकों से अपील की है कि वे सतर्क रहें और स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी निर्देशों का पूरी तरह पालन करें। उन्होंने कहा कि ग्रीष्मकाल के समय में सभी नागरिकों, विशेष रूप से बच्चों, बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं और बीमार व्यक्तियों की सुरक्षा हमारी प्राथमिकता है। सरकार और प्रशासन पूरी तरह सतर्क और तैयार हैं। समस्त स्वास्थ्य संस्थानों को आवश्यक तैयारियों के लिए निर्देशित कर दिया गया है। उन्होंने अपील की है कि सभी नागरिक सावधानियों का अवश्य पालन करें। प्रबंध संचालक, एनएचएम डॉ. सलोनी सिडाना प्रदेश के सभी जिलों के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, सिविल सर्जन और अस्पताल अधीक्षकों को गर्मी के दृष्टिगत स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए आवश्यक तैयारियों और जागरूकता के निर्देश दिए हैं। उन्होंने गर्मी के मौसम में भारत सरकार द्वारा हीट रिलेटेड इलनेस से बचाव के लिए दिशा-निर्देश को जिला व स्वास्थ्य संस्थानों को अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराने के लिए कहा है। साथ ही जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक में इन पर चर्चा कर संबंधित विभाग प्रमुखों को भी अवगत कराने के निर्देश दिए गये हैं। उन्होंने जनसामान्य को जागरूक करने और सभी स्वास्थ्य संस्थाओं में रोगियों को एचआरआई से बचाव के उपायों के प्रति जागरूक करने के निर्देश दिए हैं। साथ ही, आईएचआईपी पोर्टल पर प्रतिदिन एचआरआई मामलों की रिपोर्टिंग सुनिश्चित करने के लिये कहा गया है। इससे अधिक तापमान से होने वाली बीमारियों व अवांक्षित घटनाओं को रोका जा सकेगा। गर्मी के मौसम में शरीर में पानी की कमी होना आम समस्या है। इससे गंभीर बीमारियां उत्पन्न हो सकती हैं। नागरिक दिनभर पर्याप्त मात्रा में पानी पीते रहें, भले ही प्यास न लगे। यात्रा करते समय पानी अवश्य साथ रखें। ओआरएस, नींबू पानी, लस्सी, छाछ, फलों के रस (थोड़ा नमक मिलाकर) जैसे घरेलू

पेय का सेवन लाभकारी होता है। तरबूज, खरबूजा, संतरा, अंगूर, अनानास, खीरा जैसी मौसमी फल-सब्ज़ियों का सेवन शरीर में तरलता बनाए रखने में सहायक होता है। धूप में निकलते समय शरीर को पूरी तरह ढँकना बेहद जरूरी है। हल्के रंग के, सूती और ढीले कपड़े पहनें ताकि गर्मी से राहत मिल सके। सिर को टोपी, छतरी, गमछा या पारंपरिक उपायों से ढकना चाहिए। नंगे पांव धूप में जाना भी हानिकारक हो सकता है, इसलिए चप्पल या जूते पहनना अनिवार्य है। जहाँ तक हो सके, दोपहर के समय घर के अंदर या छांव में रहें। घर में ठंडी हवा का संचार बना रहे, इसके लिए दिन में खिड़कियां और पर्दे बंद रखें और रात में उन्हें खोल दें। बाहर जाना जरूरी हो, तो सुबह या शाम के ठंडे समय में ही जाएं। गर्मी के समय बाहरी गतिविधियों को सीमित करना आवश्यक है। घर में ठंडक बनाए रखने के लिए पर्दे, शटर या सनशेड का उपयोग करें। दिन में निचली मंजिल पर रहना ज्यादा सुरक्षित होता है। शरीर को ठंडा रखने के लिए पंखा, ठंडा पानी, गीले कपड़े, या 20एष्ट के पानी में पैरों को डुबोना सहायक होता है। छोटे बच्चे, बुजुर्ग, गर्भवती महिलाएं, मानसिक या शारीरिक बीमारियों से ग्रसित व्यक्ति और बाहर कार्य करने वाले लोग अधिक संवेदनशील होते हैं। इन लोगों को अतिरिक्त सुरक्षा और देखरेख की आवश्यकता होती है। ठंडे प्रदेश से गर्म प्रदेश में आने वाले लोगों को अपने शरीर को नई जलवायु के अनुसार ढालने के लिए समय देना चाहिए। दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक बाहर न निकलें। इस समय गर्मी अपने चरम पर होती है। भारी कामकाज या शारीरिक मेहनत भी टालें। नंगे पांव बाहर न निकलें। गर्मी में खाना पकाते समय रसोई में वेंटिलेशन रखें।

शराब, चाय, कॉफी, सॉफ्ट ड्रिंक्स, या अधिक मीठे पेयों से बचें, ये शरीर से तरलता कम करते हैं।

प्रदेश में जन भागीदारी से चल रहे हैं पानी सहेजने के कार्य

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। प्रदेश में जल गंगा संवर्धन अभियान जन भागीदारी से निरंतर जारी है। समाज का प्रत्येक तबका इस कार्य में स्वयं को जोड़ रहा है। प्रशासनिक अमला भी समान रूप से इस अभियान में शामिल हो रहा है।

अशोकनगर जिले के ईसागढ़ विकासखंड में माता देवकानी मंदिर के पास चौपड़ा जन भागीदारी से सफाई अभियान में ग्रामीणों ने भागीदारी की। स्थानीय लोगों द्वारा बताया गया कि चौपड़ा प्राचीन जल स्त्रोत रहा है। पहले यह जल स्त्रोत पानी से भरा रहता था। साथ-सफाई के अभाव में अब यह सूखता जा रहा है। जन अभियान परिषद के कार्यकर्ताओं ने ग्रामीणों को शामिल कर चौपड़ा की साफ-सफाई कराई और शपथ दिलाकर भविष्य में भी इसे

संरक्षित करने की शपथ दिलाई गई। अशोकनगर जिले में नवांकुर संस्था द्वारा दीवार लेखन से जन सामान्य को जल संरक्षण का महत्व बताया जा रहा है।

धार जिले के सरदारपुर नगर में एक प्रेरणादायी पहली की शुरूआत हुई। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत पुरानी उपेक्षित जल स्त्रोतों को पुनर्जीवित करने का बीड़ा प्रशासन और आम नागरिकों ने उठाया है। माही नदी के तट पर अभियान की विधिवत शुरूआत हुई विभिन्न संस्थाओं के स्वयं सेवक श्रमदान कर घाट क्षेत्र की सफाई कर रहे हैं। माही नदी के पास ऐतिहासिक कुआं, शनिदेव मंदिर के पीछे आम के बागीचे में स्थित 3 पुराने कुए, ताल कटोरा मैदान का ब्रिटिश कालीन कुआं और प्राचीन बावड़ी के सफाई कार्य को भी इसके शामिल किया गया है।

राज्यपाल पटेल ने राजभवन के प्रवेश द्वार क्रमांक- 1 एवं 2 के जीर्णोद्धार एवं सुदृढ़ीकरण कार्य का किया भूमि-पूजन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने राजभवन के प्रवेश द्वार क्रमांक- 1 एवं 2 के जीर्णोद्धार एवं सुदृढ़ीकरण कार्य का भूमि-पूजन किया। उन्होंने विधि विधान से पूजन अर्चन किया और गेती चलाकर निर्माण कार्य का शुभारंभ किया। भूमि-पूजन कार्यक्रम राजभवन प्रवेश द्वार क्रमांक- 1 पर आयोजित हुआ। राज्यपाल श्री पटेल ने जीर्णोद्धार एवं सुदृढ़ीकरण कार्य परियोजना की विस्तार से जानकारी ली। उन्होंने कहा कि निर्माण एजेंसी कार्य की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दे। कार्य को समय सीमा में पूर्ण करें। राजभवन के प्रवेश द्वार क्रमांक 1 एवं 2 के जीर्णोद्धार

एवं सुदृढ़ीकरण कार्य की कुल लागत 66 लाख 32 हजार 900 रुपये है।

इस अवसर पर राज्यपाल के अपर सचिव श्री उमाशंकर भार्गव, विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी श्री अरविंद पुरोहित, लोक निर्माण विभाग के अधीक्षण यंत्री श्री अवनीन्द्र सिंह, कार्यपालन यंत्री श्री राकेश निगम और एस.डी.ओ. श्री एल. के. गुप्ता, नियंत्रक हाउस होल्ड राजभवन श्रीमती शिल्पी दिवाकर और राजभवन के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित थे।

मंत्री श्री सारंग ने करोंद मेट्रो निर्माण कार्य का किया निरीक्षण

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सहकारिता मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने करोंद चौराहे पर मेट्रो निर्माण कार्य का निरीक्षण किया। उन्होंने पूरे रूट का दौरा कर व्यापारियों सहित आम नागरिकों से बात की। निरीक्षण में मंत्री श्री सारंग ने उपस्थित अधिकारियों को निश्चित समयावधि में गुणवत्तायुक्त कार्य करने के साथ ही रहवासियों की समस्याओं के निदान के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि मेट्रो परियोजना के साथ करोंद चौराहे पर यातायात एवं नागरिकों के आवागमन में कोई व्यवधान नहीं हो, यह सुनिश्चित किया जाये। मेट्रो परियोजना के साथ यातायात सुगम बनाने के लिये अधिकारियों को दिये निर्देश निरीक्षण के दौरान स्थानीय नागरिकों और व्यापारियों ने मंत्री श्री सारंग को अवगत कराया कि पियर्स निर्माण के चलते की गई बैरिकेडिंग से आवागमन में कठिनाई हो रही है। साथ ही करोंद चौराहे पर ट्रैफिक का अत्यधिक दबाव रहने के कारण दिन के समय जाम की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

मंत्री श्री सारंग ने करोंद चौराहे से हाउसिंग बोर्ड तक लगाई गई बैरिकेडिंग के पास सड़क के बाएं ओर बने डक्ट को हटाने के निर्देश दिए, जिससे अतिरिक्त मार्ग उपलब्ध हो सके और ट्रैफिक दबाव कम हो। साथ ही पथ विक्रेताओं को व्यवस्थित ढंग से अन्य स्थान पर स्थानांतरित करने के भी निर्देश अधिकारियों को दिये गए। मेट्रो अधिकारियों द्वारा जानकारी दी गई कि करोंद चौराहे से निशातपुरा फाटक तक कुल 70 पियर्स का प्रस्तावित निर्माण कार्य प्रगति पर है और इसे आगामी 4 माह में पूर्ण कर लिया जाएगा। मंत्री श्री सारंग ने स्पष्ट निर्देश देते हुए कहा, निर्धारित समय सीमा में पियर्स निर्माण कार्य पूर्ण कर बैरिकेड्स हटाए जाएं।

कर्नाटक के मैंगलोर से एमपी लाए गए दो किंग कोबरा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव द्वारा तीन माह पहले आईएफएस सर्विस मीट के दौरान कागज के खिलौनों को सांप बताकर डराने का बयान देने और एमपी में किंग कोबरा की जरूरत बताने के बाद वन अफसरों ने एमपी में किंग कोबरा लाने का इंतजाम किया है। कर्नाटक के अफसरों से संवाद के बाद मेंगलोर से दो किंग कोबरा को पांच दिन पहले यानि सोमवार को भोपाल लाए गए हैं। जिन्हें क्वारैंटाइन किया गया है। एमपी का वन महकमा इसके बदले दो टाइगर कर्नाटक के वन महकमे को देगा जो गर्मी के बाद यहां से शिफ्ट किए जाएंगे।

प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्य जीव के द्वारा कर्नाटक के प्रधान मुख्य वन संरक्षक को वन्य जीव और मुख्य वन्यजीव अभिरक्षक कर्नाटक से चर्चा की गई। साथ ही कुमार पुष्कर अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक वन्यजीव कर्नाटक के किंग कोबरा एमपी लाने को लेकर चर्चा की गई थी। इसके बाद डॉयरेक्टर पिलीकुला बायोलॉजिकल पार्क मेंगलौर कर्नाटक से दो किंग कोबरा सर्प को 2 रॉयल बंगाल टाइगर के बदले दिए जाने पर के लिए प्रक्रिया शुरू करने को लेकर वन विहार राष्ट्रीय उद्यान भोपाल को आदान प्रदान करने के संबंध में केंद्रीय चिड़ियाघर प्राधिकरण नई दिल्ली को प्रस्ताव भेजने के लिए निर्णय लिया गया।

केंद्रीय मंत्री अमित शाह के मुख्य आतिथ्य में 13 अप्रैल को भोपाल में होगा राज्य स्तरीय सहकारिता सम्मेलन

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। रवीन्द्र भवन, भोपाल में 13 अप्रैल को राज्य स्तरीय सहकारिता सम्मेलन का आयोजन होने जा रहा है। इस आयोजन में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में आयोजित सम्मेलन में सहकारिता के क्षेत्र में मध्यप्रदेश की उपलब्धियों एवं नवाचारों को प्रदर्शित किया जाएगा।

खेल एवं युवा कल्याण मंत्री श्री विश्वास कैलाश सारंग ने गुरूवार को सहकारिता विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ सम्मेलन की तैयारियों

को लेकर समीक्षा बैठक की। बैठक में आयोजन की रूपरेखा, कार्यक्रम की व्यवस्थाएं एवं जन सहभागिता को लेकर विस्तृत चर्चा की गई।

बैठक के दौरान मंत्री श्री सारंग ने कहा कि राज्य स्तरीय सहकारिता सम्मेलन न केवल सहकारी संस्थाओं की उपलब्धियों का उत्सव होगा, बल्कि आने वाले समय की दिशा और दशा तय करने का भी माध्यम बनेगा। उन्होंने अधिकारियों से कहा कि सम्मेलन की प्रत्येक गतिविधि सुव्यवस्थित, उद्देश्यपूर्ण और जनोपयोगी होनी चाहिए, जिससे सहभागी लाभार्थियों और आमजन को सकारात्मक संदेश जाए।

राज्य स्तरीय सहकारिता सम्मेलन के दौरान सहकारिता के विभिन्न क्षेत्रों में किए गए कार्यों और योजनाओं को प्रदर्शित किया जाएगा। इस अवसर पर मध्यप्रदेश में पैक्स (प्राथमिक कृषि साख सहकारी समितियों) के व्यवसाय विविधीकरण के अंतर्गत हुए प्रयासों की लघु फिल्मों के माध्यम से प्रस्तुति दी जाएगी।

जल संरक्षण एवं संवर्धन के लिए 'आर्ट ऑफ लिविंग' और मध्यप्रदेश राज्य रोजगार गारंटी परिषद के बीच समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल की पहल पर मध्यप्रदेश राज्य रोजगार गारंटी परिषद और 'आर्ट ऑफ लिविंग' संस्था के सहायक संगठन व्यक्ति विकास केंद्र इंडिया के मध्य एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। प्रदेश में नदियों के उद्गम क्षेत्रों में वाटरशेड विकास तथा पारंपरिक चंदेला-बुंदेला तालाबों के संरक्षण और पुनरुद्धार के लिए यह महत्वपूर्ण कदम ।

इस समझौते का उद्देश्य राज्य में जल संरक्षण और संवर्धन को वैज्ञानिक ढंग से सशक्त करना है। यह एमओयू 'जल गंगा संवर्धन अभियान' के अंतर्गत कार्यान्वित किया जाएगा। कार्यक्रम के अंतर्गत राज्य के विभिन्न जलग्रहण क्षेत्रों में कार्य योजना बनाना, वैज्ञानिक प्रशिक्षण देना, समुदाय आधारित जागरूकता अभियान चलाना और जल प्रबंधन को सशक्त करना प्रमुख उद्देश्य हैं। इस अवसर पर 'आर्ट ऑफ लिविंग' की ओर से व्यक्ति विकास केंद्र इंडिया के अध्यक्ष श्री रोहित सिक्का एवं मध्यप्रदेश राज्य रोजगार गारंटी परिषद की ओर से आयुक्त श्री अवि प्रसाद ने हस्ताक्षर किए।

व्यक्ति विकास केंद्र इंडिया द्वारा पंचायत स्तर से लेकर राज्य स्तर तक विभिन्न हितधारकों और ग्रामीण समुदायों को जल संरक्षण, जल प्रदूषण नियंत्रण एवं जल गुणवत्ता सुधार पर प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। इसरो सहित अन्य एजेंसियों से प्राप्त रिमोट सेंसिंग डेटा के आधार पर वैज्ञानिक कार्य योजना तैयार की जाएगी। जल संचयन की संभावनाओं को सॉफ्टवेयर के माध्यम से चिन्हित किया जाएगा और इसमें सुधार हेतु तकनीकी सहायता भी दी जाएगी। मनरेगा के अमले को विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (ई-डीपीआर) बनाने में सहयोग प्रदान किया जाएगा।

फील्ड डेटा संग्रहण हेतु मोबाइल ऐप्स की सुविधा दी जाएगी एवं कार्यों की सतत निगरानी की जाएगी। जल हितधारकों को युवा नेतृत्व प्रशिक्षण, जल चेतना शिविर जैसे कार्यक्रमों से जोड़कर समुदाय-नियंत्रित जल प्रबंधन को बढ़ावा दिया जाएगा।

स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को पानी संबंधी मुद्दों पर सक्रिय भागीदारी हेतु प्रोत्साहित किया जाएगा। जल नीति और अधिनियमों के प्रति सभी हितधारकों के बीच जागरूकता पैदा की जाएगी। इस समझौते के तहत तैयार की गई कार्य योजनाओं का क्रियान्वयन मनरेगा के नियमानुसार किया जाएगा। इसके अतिरिक्त, जो कार्य मनरेगा में अनुमन्य नहीं हैं, उन्हें अन्य स्रोतों से वित्तीय संसाधन जुटाकर पूरा किया जाएगा।

पंचायत एवं ग्रामीण विकास मंत्री पटेल ने दी पौधरोपण के लिए तीन सूत्रीय योजना

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पंचायत एवं ग्रामीण विकास व श्रम मंत्री श्री प्रहलाद सिंह पटेल ने गुरुवार को गुना जिले की ग्राम पंचायत पुरैनी अंतर्गत ग्राम कंजा में स्थित कूनो नदी के उद्गम स्थल पर 'जल गंगा संवर्धन अभियान' में सहभागिता कर जल संरक्षण के प्रति जनजागरूकता का संदेश दिया। इस अवसर पर बालिकाओं ने पारंपरिक वेशभूषा में सिर पर कलश धारण कर यात्रा निकाली। मंत्री श्री पटेल ने सभी बालिकाओं का तिलक कर उनके चरण स्पर्श किए। इसके बाद उन्होंने कूनो नदी के उद्गम स्थल पर पहुंचकर ग्रामीणों से संवाद करते हुए इस स्थान के ऐतिहासिक महत्व की जानकारी ली। उद्गम स्थल पर वैदिक मंत्रोच्चार के साथ कलश पूजन एवं भूमि-पूजन किया गया। आवन गुरुकुल के आचार्य एवं छात्रों ने मंत्रोच्चार किया। कार्यक्रम में गुना विधायक श्री पन्नालाल शाक्य सहित जनप्रतिनिधिगण एवं अधिकारी उपस्थित रहे। मंत्री श्री पटेल ने कहा कि नदियां सदियों से समाज की जल आवश्यकताओं को पूरा करती आ रही हैं। उन्होंने पौधरोपण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमें ऐसे पौधे लगाने चाहिए जो भू-जल स्तर बनाए रखने में सहायक हों। उन्होंने पौधरोपण के लिए तीन प्रमुख बातों पर बल दिया। उपयुक्त स्थान का चयन पौधों की तार फेंसिंग द्वारा सुरक्षा एवं पानी की व्यवस्था सुनिश्चित करना। मंत्री श्री पटेल ने कलेक्टर श्री कन्याल को कहा कि, ऐसी शासकीय भूमि का चयन किया जाए जहाँ पौधे सुरक्षित रूप से पनप सकें और एक दिन विशाल वृक्ष बन सकें। उन्होंने आश्वासन दिया कि इस कार्य के लिये आवश्यक सभी सहयोग उनकी ओर से उपलब्ध कराया जाएगा।

समर्थन मूल्य पर गेहूं उपार्जन के लिए 15.33 लाख किसानों ने कराया पंजीयन - खाद्य मंत्री राजपूत

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री गोविन्द सिंह राजपूत ने बताया कि उपार्जन की अवधि 15 मार्च से 5 मई 2025 तक निर्धारित है। किसानों को गेहूं के लिए 2,425 प्रति क्विंटल समर्थन मूल्य के साथ 175 प्रति क्विंटल बोनस, कुल 2,600 प्रति क्विंटल का भुगतान किया जा रहा है। खाद्य मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि प्रदेश में 3,528 उपार्जन केंद्रों की स्थापना की गई है। अब तक कुल 3.09 लाख किसानों से 26.73 लाख मीट्रिक टन गेहूं का उपार्जन किया गया है। इसमें से 24.44 लाख मीट्रिक टन का परिवहन तथा 21.86 लाख मीट्रिक टन का भंडारण किया जा चुका है। मंत्री श्री राजपूत ने बताया कि अब तक किसानों को 5,027 करोड़ का भुगतान किया जा चुका है। शेष भुगतान 3 से 5 कार्य दिवसों में पूर्ण कर लिया जाएगा। मंत्री श्री राजपूत ने कहा कि राज्य सरकार किसानों को समय पर उचित मूल्य और पारदर्शी व्यवस्था उपलब्ध कराने के लिए संकल्पबद्ध है। उपार्जन प्रक्रिया को सरल, व्यवस्थित और किसान हितैषी बनाने के लिए सभी आवश्यक प्रबंध किए गए हैं।

सेमरिया में भाजपा का सक्रिय सदस्य सम्मेलन बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं ने दिखाई एकजुटता

मीडिया ऑडीटर, सेमरिया (निप्र)। भारतीय जनता पार्टी के 46वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में पूरे मध्यप्रदेश में संगठनात्मक गतिविधियों की श्रृंखला के तहत 8 और 9 अप्रैल को सभी 230 विधानसभा क्षेत्रों में सक्रिय सदस्य सम्मेलन आयोजित किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में शुक्रवार को सेमरिया विधानसभा क्षेत्र में भी भाजपा का सक्रिय सदस्य सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें क्षेत्र भर से बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में रीवा सांसद जनार्दन मिश्रा, भाजपा जिला अध्यक्ष वीरेंद्र गुप्ता और पूर्व विधायक केपी त्रिपाठी मंच पर मौजूद रहे। सम्मेलन में कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए सांसद जनार्दन मिश्रा ने भाजपा की विचारधारा और संगठन की भूमिका पर विस्तार से बात की। उन्होंने कहा कि भाजपा केवल एक राजनीतिक दल नहीं, बल्कि यह एक विचारधारा है, जिसे कार्यकर्ताओं की मेहनत और निष्ठा से मजबूती मिलती है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हुए विकास कार्यों का उल्लेख करते हुए कार्यकर्ताओं से सरकार की योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने की अपील की। भाजपा जिला अध्यक्ष वीरेंद्र गुप्ता ने अपने संबोधन में संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि पार्टी की मजबूती कार्यकर्ताओं की सक्रियता पर निर्भर करती है और ऐसे सम्मेलनों के माध्यम से संगठन को नई दिशा और ऊर्जा मिलती है।

पूर्व विधायक केपी त्रिपाठी ने कहा कि "सेमरिया का विकास ही रीवा की तरक्की की नींव है, हम सब मिलकर सेमरिया को सशक्त बनाएंगे, और रीवा को नंबर 01 बनाएंगे!" , केवल सशक्त भाजपा ही विकसित भारत का निर्माण कर सकती है और भारत को पुनः विश्वगुरु के पद पर स्थापित करने की दिशा में अग्रसर है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से आह्वान किया कि रीवा के साथ -साथ संगठन को और मजबूत बनाकर इस संकल्प को साकार करें।

उन्होंने आगे कहा की सेमरिया की राजनीतिक भूमि हमेशा से भाजपा के लिए सहायक रही है। उन्होंने कार्यकर्ताओं को व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं से ऊपर उठकर संगठन को प्राथमिकता देने का संदेश दिया और कहा कि एकजुटता से ही पार्टी भविष्य में और सशक्त बन सकती है। कार्यक्रम में प्रमुख रूप से पूर्व सांसद देवराज सिंह, जिला महामंत्री एवं पूर्व महापौर ममता गुप्ता, मंडल अध्यक्ष शेषमणि पांडेय, अरुणेंद्र तिवारी, दीपक सिंह, वरिष्ठ भाजपा नेता दयानंद तिवारी, जयराम अग्निहोत्री, दिवाकर द्विवेदी, मुनेंद्र पयासी, सुंदरलाल अग्निहोत्री (गुरु बाबा), भागवत शुक्ला, अनिल पांडे, मुरलीधर शर्मा (रन्नू), विश्वनाथ साहू, सतेंद्र सिंह (गुड्डू), गजेंद्र दुबे, सेमरिया नगर अध्यक्ष प्रतिनिधि राजेंद्र विश्वकर्मा, रीवा जनपद अध्यक्ष प्रतिनिधि राजेश यादव, राजेंद्र द्विवेदी सहित कई अन्य पदाधिकारी और सक्रिय सदस्य उपस्थित रहे।

सम्मेलन के दौरान भाजपा की संगठनात्मक उपलब्धियों, विकास योजनाओं और आगामी चुनावी तैयारियों को लेकर भी चर्चा हुई। राजनीतिक जानकारों का मानना है कि यह सम्मेलन पार्टी की सांगठनिक एकजुटता और आगामी रणनीतियों का हिस्सा है, जिससे आने वाले समय में सेमरिया विधानसभा क्षेत्र की राजनीतिक दिशा पर असर पड़ सकता है।

मनाया जाएगा अमर शहीद संत कंवरराम सहिब जी का जन्मोत्सव

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना अमर शहीद संत कंवर राम साहब जी का 140 वा जन्मोत्सव बड़ी धूमधाम व हर्षोलास के साथ 13 अप्रैल रविवार को सिन्धी कॉलोनी स्थित संत कंवरराम दरबार में साई किशोरलाल जी के सानिध्य में मनाया जाएगा। आश्रम के सेवादारी अमर लालवानी ने बताया जन्मोत्सव पर सर्वप्रथम प्रातः9 बजे जगतदेव तालाब में दरिद्र नारायण का भंडारा होगा एवं शाम 7. बजे सत्संग कीर्तन के पश्चात केककाट कर जमोत्सव मानते हुए बधाई प्रेषित की जाएगी एवं रात्रि में 9.30 बजे से विशाल भंडारे का आयोजन किया गया है

आश्रम के साई किशोरलाल जी दिलीप मोडिया रोहित मोडिया बलराम दास लालवानी कन्हैयालाल लालवानी मनीष टेकवानी अनिल सचदेव हीरालाल गांदेजा शंकर लाल लालवानी प्रतापराय गंधेजा पारु संजय वाधवानी सर्वत लालवानी विनोद गेलानी दिलीप सोनी संजय आहूजा शंकर लालवानी जियाल दास दूसेजा मनोज वलेचा ने समाज की माता बहनों युवाओ एवं बुजुर्गों से सपरिवार जन्मोत्सव में शामिल होने का अनुरोध किया।

सिंगरौली में भांजे ने मामी से ठगे 6 लाख, रुपए डबल करने के नाम पर लिए थे

अब धमकी देकर हुआ फरार

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली जिले में मुहेर इलाके की रहने वाली सीता देवी शाह के साथ उनके रिश्ते के भांजे ने ठगी कर ली। भांजे भगवान दास ने पैसे दोगुना करने का झांसा देकर मामी से 6 लाख रुपए ले लिए। सीता देवी ने शुक्रवार को बताया कि दो साल पहले भगवान दास ने उनसे पैसे मांगे। उसने कहा कि एक साल में पैसे दोगुने हो जाएंगे। सीता देवी ने अपने बैंक खाते से 6 लाख रुपए भगवान दास के बताए खाते में ट्रांसफर कर दिए। यह रकम उन्हें विस्थापन के एवज में मिले 12 लाख रुपयों में से थी।

एक साल बीत जाने के बाद जब सीता देवी ने अपने पैसे मांगे, तो भगवान दास टालमटोल करने लगा। पिछले एक साल से वह पैसों के लिए भटक रही हैं। आरोपी भगवान दास न सिर्फ पैसे लौटाने से मना कर रहा है, बल्कि उनके बच्चे को जान से मारने की धमकी भी देकर फरार है।

परेशान होकर सीता देवी ने जिला पुलिस अधीक्षक से शिकायत की है। एसपी मनीष खत्री ने बताया कि मामले की जांच के लिए थाना प्रभारी को निर्देश दिए गए हैं। साक्ष्य मिलने पर वैधानिक कार्रवाई की जाएगी।

जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत मूड़ी तालाब में लोगों ने किया श्रमदान

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के निर्देशानुसार जल संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक करने जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। इसी र म में नगर पालिका परिषद क्षेत्रांतर्गत जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत मूड़ी तालाब में घाट की सफाई एवं मंदिर प्रांगण की सफाई की गई। स्वच्छता कार्यर म के तहत तालाब में स्थित कचरा एवं गाद को निकाला गया। कार्यर म में मुख्य नगर पालिका अधिकारी मिनी अग्रवाल, वरिष्ठ समाज सेवी विनोद वर्मा, रजनीश श्रीवास्तव, जय सिंह, गौरव सिंह स्वच्छता प्रभारी, प्रदीप द्विवेदी एवं नगर पालिका के सभी कर्मचारी उपस्थित रहे। जनअभियान परिषद के नेतृत्व में रश्मि दिव्यांग सेवा समिति के पदाधिकारियों एवं समाजसेवियों ने श्रमदान किया।

जन जागरूकता से होगा जलाशयों का पुनरुद्धार

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के द्वारा पूरे जिले में जन जागरूकता, संगोष्ठी, रैली, दीवार लेखन एवं पेंटिंग के माध्यम से जल के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु समाज की सहभागिता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से कार्यर म संचालित किया जा रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव की मंशानुसार जिला कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज के दिशा निर्देशानुसार जिले के अंतर्गत वृहद रूप से जल गंगा संवर्धन अभियान को जन-जन का अभियान बनाने हेतु मध्यप्रदेश जन अभियान परिषद के जिला समन्वयक शिवदत्त उरमलिया द्वारा प्रयास किया जा रहे है। इस अभियान में जन अभियान परिषद का समस्त अमला विकासखंड समन्वयक अनिल पाठक एवं रजनीश मिश्रा तथा नव अंकुर संस्थान व परामर्शदाताओं के द्वारा अनेकों प्रकार की गतिविधि संचालित करके योजना को सफल एवं अमली जामा पहनाने का कार्य हो रहा है। इसी र म में दिनांक 10 अप्रैल को विकासखंड मझौली के सेहरा नदी, विकासखंड कुसमी के बारी एवं डेवा तथा विकासखंड सिहावल के बमोरी सेक्टर के अंतर्गत बरबंधा में वृहद रूप से जल संरचनाओं की स्वच्छता एवं संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

सीईओ जिला पंचायत ने कुसमी में की जल गंगा संवर्धन अभियान की समीक्षा

लक्ष्य अनुसार कार्य प्रारंभ कर 30 जून तक पूर्ण करने के दिए निर्देश

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज द्वारा जल गंगा संवर्धन अभियान अंतर्गत जनपद पंचायत कुसमी में किए जाने वाले कार्यों की विस्तृत समीक्षा की गई। उन्होंने वित्तीय वर्ष 2024-25 से पूर्व के प्रगतिरत 822 कार्यों को अभियान अंतर्गत पूर्ण किये जाने हेतु निर्देशित किया। वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए खेत तालाब का लक्ष्य 370 सीपरी टूल्स के माध्यम से चयनित किए जाने के निर्देश दिए गए, 15 नए अमृतसरोवर के लक्ष्य भी दिए गए, 42 डग वेल रिचार्च के भी नवीन लक्ष्य प्रदाय किए गए। लक्ष्य अनुसार कार्य प्रारंभ कर 30 जून तक पूर्ण किए जाने हेतु समय-सीमा निर्धारित की गई। समीक्षा बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना के आवासों को पूर्ण किए जाने, ई-केवाईसी के कार्य अभियान/कैंप लगाकर एक सप्ताह में पूर्ण किए जाने के निर्देश दिए गए। उन्होंने कहा कि समय-सीमा में कार्य पूर्ण न होने पर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जावेगी। जल गंगा संवर्धन अभियान की ब्लॉक स्तरीय समिति की बैठक भी सीईओ जिला पंचायत द्वारा ली गई जिसमें उपखंड अधिकारी प्रिया पाठक, परियोजना अधिकारी शैलेश पांडे, मुख्य कार्यपालन अधिकारी ज्ञानेंद्र मिश्रा, एसडीओ सरिता सिंह, अतिरिक्त कार्यर म अधिकारी अजय द्विवेदी, तहसीलदार, ब्लॉक समन्वयक, उपयंत्री, पीसीओ, पटवारी, सचिव एवं समस्त रोजगार सहायक उपस्थित रहे।

गोवंश संरक्षण के तहत पशुओं की टैगिंग का कार्य किया जा रहा

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के निर्देशानुसार 30 मार्च से 30 जून 2025 तक ''जल गंगा संवर्धन अभियान'' चलाया जा रहा है। अभियान के तहत नवीन जल संग्रहण संरचनाओं के निर्माण, भू-जल संवर्धन पूर्व से मौजूद जल संग्रहण संरचनाओं के साफसफाई व जीर्णोद्धार/मरम्मत, जल स्रोतों के प्रदूषण के स्तर को कम करने, जल वितरण की संरचनाओं की साफसफाई तथा मानसून में किए जाने वाले पौधा रोपण के कार्य प्राथमिकता लिये जाने के निर्देश है। इसी अभियान के साथ जिले में ''गौवंश संरक्षण अभियान'' भी संचालित किया जा रहा है, जिसका मुख्य उद्देश्य जिला प्रशासन तथा जिले के जनप्रतिनिधि, समाज की जनभागीदारी के माध्यम से गौवंश का सरंक्षण तथा सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाया जा सकें, जिससे गौवंश तथा जनहानि से बचाया जा सकें। यह अभियान समाज और प्रशासन की साझेदारी से जन आंदोलन बन जाये तथा गौवंश के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु आवश्यक कार्य किए जा सकें। यह अभियान भी 30 मार्च से 30 जून 2025 तक संचालित रहेगा।

गौवंश संरक्षण अभियान अंतर्गत उपसंचालक पशु चिकित्सा सेवा द्वारा जिले अंतर्गत समस्त गौवंश का पंजीयनध्टैग का कार्य शत-प्रतिशत पूर्ण करना अनिवार्य होगा, ताकि सभी गौवशों का चिन्हांकन किया जा सके। जिसकी समय-सीमा 15 अप्रैल 2025 तक निर्धारित है। गौवंश संरक्षण अभियान अंतर्गत समस्त पशुओं का पंजीयन उपरांत उनका स्वास्थ्य परीक्षण तथा समुचित उपचार की कार्यवाही का संपादन करना है। गौवंश संरक्षण अधिनियम की धारा-163 के तहत यदि कोई कार्यवाही आवश्यक हो तो प्रस्तावित करेंगे। समय-सीमा 30 अप्रैल 2025 तक निर्धारित है।

इसी र म में गोवंश संरक्षण अभियान के तहत गौशाला हनुमानगढ़ ब्लाक रामपुर नैकिन जिला सीधी में डॉ अनामिका पांडे पशु चिकित्सालय सेमरिया एवं पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी पश्चिम चिकित्सालय हनुमानगढ़ संघमित्र गुप्ता के द्वारा पशुओं की टैगिंग कार्य किया गया एवं पंजीयन कार्य किया जा रहा है।

सीईओ ने किया पुस्तक मेला का शुभारंभ, खरीदारी करने उमड़ी भीड़

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय सीधी में दो दिवसीय पुस्तक मेला का शुभारंभ 11 अप्रैल को मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत सीधी श्री अंशुमन राज ने किया। मेला में शाम को खरीदारों की भीड़ उमड़ पड़ी। मेला में एक ही स्थान पर छात्रों और अभिभावकों को गणवेश, पुस्तक, बैग, कॉपिया और स्टेशनरी उचित कीमत पर मिल रही है।

मुख्य कार्यपालन अधिकारी ने पुस्तक मेला आयोजन की प्रशंसा किया। उन्होंने कहा कि यह मेला व्यवस्थित और वृहद स्वरूप में आयोजित हो रहा है। पुस्तक मेला में दुकानदार वाजिब मूल्य पर और छूट के साथ शैक्षणिक सामग्रियों का विर य कर रहे हैं।

जिला शिक्षा अधिकारी श्री पवन कुमार सिंह ने बताया कि पुस्तक मेला का आयोजन कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी के मार्गदर्शन में हो रहा है। डीपीसी राजेश तिवारी, रमसा एपीसी डॉ सुजीत मिश्रा, विष्णु पांडे, श्रीमती प्रवीण वर्मा, सहायक संचालक ओशो उत्सव उत्सव सहित विभिन्न विद्यालय के प्राचार्य, शिक्षक, सैकड़ो की तादाद में अभिभावक एवं विद्यार्थी मेला का लाभ लिए।

कार्यालय नगर पालिक निगम, रीवा (म.प्र.)

क्रमांक 1230/न.पा.नि./राजस्व/2024-25 रीवा, दिनांक 08/04/2025

अचल सम्पत्ति नामांतरण विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि पूर्व नगर सुधार न्यास रीवा की योजना क्रमांक-6 विवेकानन्द नगर जो नगर पालिक निगम रीवा के स्वामित्व में है, में स्थित भूखण्ड क्रमांक 2/171 कुल क्षेत्रफल 645.60 वर्गफिट श्रीमती कमला देवी पति श्री हरिशंकर निरत निवासी न्यू आवासीय कालोनी नियर पोस्ट आफिस रोड गनियारी बैढन जिला सिगरौली (म.प्र.) को 30 वर्षीय लीज पर आवंटित है, जिसका नामान्तरण श्री अंश कुमार निरत आयु 12 वर्ष नावालिग बली सरपरस्त पिता श्री मृगेन्द्र कुमार निरत आत्मज श्री हरिशंकर निरत निवासी न्यू आवासीय कालोनी पोस्ट आफिस रोड गनियारी बैढन जिला सिगरौली (म.प्र.) के नाम किये जाने हेतु दिनांक 27.02.2025 को आवेदन पत्र प्रस्तुत किया गया है। उक्त भूखण्ड क्रमांक 2/171 के नामान्तरण में किसी व्यक्ति / संस्था को कोई आपत्ति हो, तो समाचार पत्रों में इस विज्ञप्ति के प्रकाशन के 15 दिवस की अवधि तक कार्यालय नगर पालिक निगम रीवा में प्रमाणित अभिलेखों के साथ उपस्थित होकर लिखित में अपनी आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि के पश्चात् कोई आवेदन/आपत्ति न तो ग्रहण की जावेगी और न ही मान्य की जावेगी। तत्पश्चात् आवेदक श्रीमती कमला देवी पति श्री हरिशंकर निरत निवासी न्यू आवासीय कालोनी नियर पोस्ट आफिस रोड गनियारी बैढन जिला सिगरौली (म.प्र.) के आवेदन अनुसार भूखण्ड क्रमांक 2/171 का नामान्तरण श्री अंश कुमार निरत आयु 12 वर्ष नावालिग बली सरपरस्त पिता श्री मृगेन्द्र कुमार निरत आत्मज श्री हरिशंकर निरत निवासी न्यू आवासीय कालोनी पोस्ट आफिस रोड गनियारी बैढन जिला सिगरौली (म.प्र.) के नाम करने की कार्यवाही की जावेगी।

उपायुक्त (राजस्व)
नगर पालिक निगम रीवा (म.प्र.)

विचार

क्या नया वक्फ कानून मुस्लिम विरोधी है?

बीते हफ्ते संसद से पारित वक्फ संशोधन विधेयक (यू.एम.ई.ई.डी.), 5 अप्रैल को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू की स्वीकृति के बाद कानून बन गया। राजनीतिक कारणों (वोट बैंक सहित) से विपक्षी दलों के निजी स्वार्थ के चलते कई इस्लामी संगठनों का आरोप है कि नया वक्फ कानून 'मुस्लिम विरोधी' और 'संविधान के खिलाफ' है। इसके खिलाफ सर्वोच्च न्यायालय में 10 से अधिक याचिकाएं दायर हुई हैं। जम्मू-कश्मीर विधानसभा में 7 अप्रैल को सत्तारूढ़ नैशनल कांफ्रैंस के एक विधायक ने सदन में इस नए कानून की प्रति फाड़कर अपना रोष जाहिर किया, तो मणिपुर में इसका समर्थन करने पर भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष असगर अली के घर को अराजक तत्वों ने फूंक दिया। यह स्थिति तब है, जब इसके विरोध को लेकर मुस्लिम समाज ही बंटा हुआ है। यह ठीक है कि नए वक्फ कानून के संवैधानिक, न्यायिक पक्ष का फैसला अदालत में होगा। परंतु इसके अन्य पक्ष भी हैं, जिस पर ईमानदारी से विचार करना चाहिए।

क्या वक्फ जैसा कानून भारत में किसी और अल्पसंख्यक समूह, बौद्ध, सिख, जैन, ईसाई, पारसी आदि के लिए है? हिंदू और सिख ट्रस्ट जहां सरकारी निगरानी में काम करते हैं, वहीं वक्फ बोर्ड पर कोई नियंत्रण नहीं था,जिससे भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन को बढ़ावा मिला। नया वक्फ कानून इस स्थिति को सुधारता है और कानूनी प्रक्रिया को बल देता है। वक्फ का अर्थ किसी चल-अचल संपत्ति को स्थायी तौर पर उन कार्यों के लिए दान करना है, जिन्हें इस्लाम में पवित्र और मजहबी माना जाता है। इस्लामी मान्यताओं के अनुसार, अल्लाह ही वक्फ संपत्तियों के मालिक हैं, लेकिन उनका भौतिक प्रबंधन मुतवल्ली और देश में कुल 32 वक्फ बोर्ड करते हैं। वर्ष 1954 से लेकर वक्फ संपत्तियों के नियंत्रण, कानूनी अड़चन और बेहतर प्रबंधन आदि को लेकर वक्फ अधिनियम में पहले से कई संशोधन हो चुके हैं।

देश में वक्फ का कामकाज पहले 'वक्फ अधिनियम, 1995' की छत्रछाया में होता था। इसे तब केंद्र की तत्कालीन कांग्रेस नीत नरसिम्हा राव सरकार ने कार सेवकों द्वारा 6 दिसंबर 1992 को अयोध्या में औपनिवेशिक बाबरी ढांचा ध्वस्त करने से छिटके मुस्लिम वोट बैंक को लुभाने हेतु, 1996 के लोकसभा चुनाव से पहले संशोधित किया था। इसका वांछित लाभ कांग्रेस को नहीं मिला और वह सत्ता से दूर रही। जब केंद्र में कांग्रेस नीत यू.पी.ए. सरकार (2004-14) रही तब उसने विभाजनकारी राजनीति के तहत देश में आए दिन होते इस्लामी आतंकवादी हमले के बीच फर्जी 'हिंदू भगवा आतंकवाद' जुमला गढ़ा और फिर मुस्लिम वोट बैंक को एकजुट रखने के लिए 2014 के लोकसभा चुनाव से 6 माह पहले वक्फ अधिनियम (1995) में फिर से संशोधन करके मुस्लिम समाज को वह अधिकार दे दिया

वर्तमान वैश्विक पटल पर भारत के लिए आपदा में अवसर हैं

अमेरिका ने अन्य देशों से अमेरिका में होने वाली आयातित उत्पादों पर भारी भरकम टैरिफ लगाकर विश्व के लगभग समस्त देशों के विरुद्ध एक तरह से व्यापार युद्ध छेड़ दिया है। इससे यह आभास हो रहा है आगे आने वाले समय में विभिन्न देशों के बीच सापेक्ष युद्ध न होकर व्यापार युद्ध होने लगेगा। चीन से अमेरिका को होने वाले विभिन्न उत्पादों के निर्यात पर तो अमेरिका ने 145 प्रतिशत का टैरिफ लगा दिया है। एक तरह से अमेरिका की ओर से चीन को यह खुली चुनौती है कि अब अपने उत्पादों को अमेरिका में निर्यात कर के बताए। 145 प्रतिशत के आयात कर पर कौन सा देश अमेरिका को अपने उत्पादों का निर्यात कर पाएगा, यह लगभग असभव है। इससे चीन की अर्थव्यस्था छिन्न भिन्न हो सकती है, यदि चीन, अमेरिका के स्थान पर विश्व के अन्य देशों को अपने उत्पादों का निर्यात नहीं बढ़ा पाया।

बगैर प्रत्यक्ष युद्ध किए, अमेरिका ने चीन पर एक तरह से विजय ही प्राप्त कर ली है और चीन की अर्थव्यवस्था को भारी नुक्सान करने के रास्ते खोल दिए हैं, हालांकि अमेरिकी अर्थव्यवस्था भी विपरीत रूप से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगी। परंतु, ट्रम्प प्रशासन ने विश्व के 75 देशों पर लागू किए गए टैरिफ को 90 दिनों के लिए स्थगित कर दिया है। इससे अमेरिका की अर्थव्यवस्था पर अन्यथा होने वाले विपरीत प्रभाव को बहुत बड़ी हद तक कम कर लिए गया है। अमेरिका संभवत चाहता है कि आर्थिक मोर्चे पर चीन पर इतना दबाव बढ़ाया जाए कि चीन की जनता चीन के वर्तमान सत्ताधरियों के विरुद्ध उठ खड़ी हो और चीन एक तरह से टूट जाए। अमेरिका ने लगभग इसी प्रकार का दबाव बनाकर सोवियत रूस को भी तोड़ दिया था। कुल मिलाकर पूरे विश्व में विभिन्न देशों के बीच अब नए समीकरण बनते हुए दिखाई दे रहे हैं। यूरोपीयन यूनियन के समस्त सदस्य देश आपस में मिलकर अब अपनी सुरक्षा स्वयं करना चाहते हैं। अभी तक ये देश अमेरिका के सखा देश होने के चलते अपनी सुरक्षा के लिए अमेरिका पर निर्भर रहते थे। परंतु, वैश्विक स्तर पर बदली हुई परिस्थितियों के बीच इन देशों का अमेरिका पर विश्वास कम हुआ है एवं यह देश आपस में मिलकर अपनी स्वयं की सुरक्षा व्यवस्था खड़ी करना चाहते हैं। आगे आने वाले समय में यूरोपीयन यूनियन के समस्त देश अपने सुरक्षा बजट में भारी भरकम वृद्धि कर सकते हैं। यहां, भारत के लिए अवसर निर्मित हो सकते हैं क्योंकि भारत में हाल ही के समय में सुरक्षा के क्षेत्र में उत्पादों की नई एवं भारी मात्रा में उत्पादन क्षमता निर्मित हुई है। भारत आज सुरक्षा के क्षेत्र में तेजी से न केवल आत्म निर्भर हो रहा है बल्कि भारी मात्रा में उत्पादों का निर्यात भी करने लगा है। आज सिंगापुर जैसे विकसित देश भी भारत से सुरक्षा उत्पाद खरीदने हेतु करार करने की ओर आगे बढ़ रहे हैं। यदि यूरोपीयन देशों के साथ भारत की पटरी ठीक बैठ जाती है तो सुरक्षा के क्षेत्र में भारत के लिए अपार सम्भावनाएं मौजूद है। भारत, यूरोपीयन देशों के साथ सामूहिक तौर पर द्विपक्षीय व्यापार समझौता करने के प्रयास भी कर रहा है।

इसी प्रकार, आगे आने वाले समय में यदि चीन के निर्यात अमेरिका को कम होते हैं तो चीन से विनिर्माण इकाईयों का पलायन तेजी से प्रारम्भ होगा। संभवत इलेक्ट्रॉनिक क्षेत्र, टेक्स्टायल क्षेत्र, फार्मा क्षेत्र, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र, प्रेशस मेटल के क्षेत्र में भारत के लिए अपार सम्भावनाएं बनती हुई दिखाई दे रही है, क्योंकि, उक्त समस्त क्षेत्रों से चीन, अमेरिका को भारी मात्रा में निर्यात करता है। अब 145 प्रतिशत के टैरिफ की दर पर चीन में निर्मित उत्पाद अमेरिका में नहीं बिक पाएंगे। अत: भारत के लिए इन समस्त क्षेत्रों में अपार सम्भावनाएं बनती हुई दिखाई दे रही हैं। टेक्स्टायल के क्षेत्र में तो वर्तमान में भारत के पास बहुत भारी मात्रा में उत्पादन क्षमता भी उपलब्ध है। टेक्स्टायल के क्षेत्र में भारत के पड़ौसी देश ही अधिक प्रतिस्पर्धी बने हुए हैं, जैसे बंगलादेश, पाकिस्तान, चीन, वियतनाम आदि। इस समस्त देशों पर अमेरिका द्वारा लगाई गई टैरिफ की दर, भारत की तुलना में कहीं अधिक है। अत: टेक्स्टायल के क्षेत्र में भारत में निर्मित विभिन्न उत्पाद तुलनात्मक रूप से अधिक प्रतिस्पर्धी बन गए हैं। इसका सीधा सीधा लाभ भारतीय टेक्स्टायल उद्योग द्वारा उठाया जा सकता है। इसी प्रकार, मोबाइल फोन का उत्पादन करने वाली विश्व की सबसे बड़ी कम्पनियों में से सैमसंग एवं ऐपल नामक कम्पनियां भारत में अपनी उत्पादन क्षमता में भारी भरकम वृद्धि करने के बारे में विचार कर रही हैं। वर्ष 2024 में भारत से 2040 करोड़ अमेरिकी डॉलर के मोबाइल फोन का निर्यात विभिन्न देशों को हुआ हैं, यह वर्ष 2023 में हुए निर्यात की राशि से 44 प्रतिशत अधिक है। और, मोबाइल फोन के निर्यात में हुई इस भारी भरकम वृद्धि में ऐपल एवं सैमसंग कम्पनियों का योगदान सबसे अधिक रहा है। केंद्र सरकार द्वारा लागू की गई उत्पादन प्रोत्साहन योजना का लाभ भी भारत में मोबाइल निर्माता कम्पनियों ने भारी मात्रा में उठाया है। भारत आज स्मार्ट मोबाइल के उत्पादन के क्षेत्र में पूरे विश्व में दूसरे स्थान पर पहुंच गया है। यदि वैश्विक स्तर पर परिस्थितियां इसी प्रकार बनी रहती हैं तो शीघ्र ही भारत मोबाइल उत्पादन के क्षेत्र में पूरे विश्व में प्रथम स्थान पर आ जाएगा।

अन्य क्षेत्रों में उत्पादन करने वाली बहुराष्ट्रीय बड़ी बड़ी कम्पनियां भी अपनी विनिर्माण इकाईयों को चीन से स्थानांतरित कर भारत में स्थापित कर सकती हैं। कोविड महामारी के खंडकाल के समय भी यह उम्मीद की जा रही थी और चीन+1 नीति का अनुपालन करने के सम्बंध में कई कम्पनियों ने घोषणा की थी परंतु उस समय पर कई कम्पनियां अपनी विनिर्माण इकाईयों को ताईवान, वियतनाम, एवं थाईलैंड, आदि जैसे छोटे छोटे देशों में ले गईं थी और इसका लाभ भारत को बहुत कम मिला था। परंतु, आज परिस्थितियां बहुत बदली हुई हैं। छोटे छोटे देशों में बहुत भारी मात्रा में उत्पादन करने वाली विनिर्माण इकाईयां स्थापित करने की बहुत सीमाएं हैं। इन देशों में श्रमबल की उपलब्धता सीमित मात्रा में है। जबकि भारत में इस दौरान आधारिक संरचना एवं मूलभूत सुविधाओं में अतुलनीय सुधार हुआ है और भारत में श्रमबल भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है।

आज जापान, इजराईल, ताईवान, रूस, जर्मनी, फ्रान्स, आस्ट्रेलिया आदि विकसित देश श्रमबल की कमी से जूझ रहे हैं। कई विकसित देशों में जनसंख्या वृद्धि दर लगभग शून्य के स्तर पर आ गई है। बल्कि, कुछ देशों में तो जनसंख्या में कमी होती हुई दिखाई दे रही है। दूसरे, इन देशों में प्रौढ़ नागरिकों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ती जा रही है और इन प्रौढ़ नागरिकों की देखभाल के लिए भी युवा नागरिकों की आवश्यकता है। अब कुछ देशों जैसे जापान, इजराईल, ताईवान आदि ने भारत सरकार से भारतीय नागरिकों के इन देशों में बसाने के बारे में विचार करने को कहा है। इजराईल सरकार ने लगभग 1 लाख भारतीयों की मांग भारत सरकार से की है, जापान सरकार ने भी लगभग 2 लाख भारतीयों की मांग की है एवं ताईवान सरकार ने भी लगभग 1 लाख भारतीयों की मांग की है। भारत आज विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे युवा देश है। अत: भारत आज इस स्थिति में है कि अपने नागरिकों को इन देशों में बसाने के लिए भेज सके। वैसे भी विश्व के कई देशों में आज लगभग 4 करोड़ भारतीय मूल के नागरिक निवास कर रहे हैं एवं इन देशों की अर्थव्यवथा में शांतिपूर्ण तरीके से अपनी मजबूत भागीदारी सुनिश्चित कर रहे हैं। भारतीय नागरिक वैसे भी हिंदू सनातन संस्कृति का अनुपालन करते हैं एवं इन देशों में शांतिपूर्ण तरीके से जीवन यापन करते हैं। इतिहास गवाह है कि भारत ने कभी भी किसी भी देश पर अपनी ओर से आक्रमण नहीं किया है। भारतीय नागरिक 卐वसुधैव कुटुम्बकम卐 की भावना में विश्वास रखते हैं अत: किसी भी देश में वहां के स्थानीय नागरिकों के साथ तुरंत घुलमिल जाते हैं। अत: भारत के लिए विभिन्न देशों को श्रमबल उपलब्ध कराने के क्षेत्र में भी अपार सम्भावनाएं बनती हुई दिखाई दे रही है। कुल मिलाकर भारत सरकार ने भी विभिन्न देशों के साथ अपने द्विपक्षीय व्यापार समझौतों को शीघ्रता के साथ अंतिम रूप देना प्रारम्भ कर दिया है क्योंकि आगे आने वाले समय में विश्व व्यापार संगठन की उपयोगिता लगभग समाप्त हो जाएगी।

ट्रम्प डालर के जरिए दुनिया के राजनीतिक ढांचे को बदलना चाहते हैं

सोचिए आपने अपने नए मकान के लिए 50 लाख रुपए का लोन लिया। ब्याज की दर 9 प्रतिशत, अवधि 25 साल। आपको हर महीने करीब 42,000 रुपए की किस्त देनी पड़ेगी। अब अगर यह ब्याज की दर घट कर 6 प्रतिशत हो जाए तो आपकी किस्त 32,000 रुपए के आसपास हर महीने होगी। 25 साल के बाद आप पहले ब्याज की दर के हिसाब से 1.25 करोड़ रुपए दे चुके होंगे।

अब जरा अमरीका के कर्जे का हिसाब लें, इस सितंबर तक अपने छोटी अवधि के बांड पर उन्हें दुनिया को 8.66 ट्रिलियन डालर का भुगतान करना है। इसके लिए उन्हें औसतन 4.16 प्रतिशत की ब्याज की दर से भुगतान करना है। यानी सितंबर तक सिर्फ ब्याज-ब्याज के 360 बिलियन डालर्स जेब से सरक लिए। यह कितना पैसा है इसका अंदाजा इस बात से लगा लें कि हमारी वित्त मंत्री निर्मला ताई का पूरा का पूरा इस साल का बजट सिर्फ 560 बिलियन डालर्स का है। तो जहां अर्थशास्त्री अपना दिमाग खपा रहे हैं कि आयात और निर्यात में कितना फायदा, कितना घाटा होगा, बाजार मंदा कितना होगा, सामान कितना महंगा होगा, डोनाल्ड ट्रम्प तो बस अपने सिर पर इस भुगतान की तलवार को मंडराते देख रहे हैं। हमारे-आपके मकान पर लिए कर्ज की तरह, उनका पूरा प्रयास सिर्फ ब्याज की दर को घटाने पर है।

तेल देखो, तेल की धार देखो- तो 2 अप्रैल को ट्रम्प ने दुनिया के 180 मुल्कों पर टैरिफ ठोका। मार्कीट में भूचाल आ गया। स्टॉक मार्कीट में तबाही। विदेशी निवेशकों ने हर जगह से अपने पैसे निकालने शुरू कर दिए। भारत में ही एक दिन में 9000 करोड़ रुपए निकल लिए। अब पैसे

निकाल तो लिए पर लगाए कहां, फिर वही डालर। हाथी कितना भी पतला हो जाए, हाथी तो हाथी है। एक दिन के अंदर अमरीका के ब्याज की दर 4 अप्रैल को 4.16 प्रतिशत से घट कर 3.97 प्रतिशत रह गई। अब अगर यह ब्याज की दर 10 साल के बांड पर घट कर 2.5 प्रतिशत रह जाए तो अमरीका को हर साल 360 बिलियन डालर्स की बजाय सिर्फ 200 बिलियन डॉलर्स का ही ब्याज चुकाना पड़ेगा। यानी हर साल जेब में बचेंगे 160 बिलियन डालर्स और जो बांड दबा के बिक रहे हैं, उसका पैसा अलग। तो इसका असर पाठकों को बताने की जरूरत नहीं है। ज्यादा कमाई, कर्ज सस्ता, बहीखाते में घाटा कम। जहां अर्थशास्त्री मार्कीट में मांग और आपूर्ति के चक्रव्यू में उलझे रहते हैं, ट्रम्प डालर को एक विध्वंसक शक्ति की तरह इस्तेमाल कर रहे हैं।

ट्रम्प के समीकरण में उनके टैरिफ का जवाब दुनिया देगी भी तो कैसे? हथियार के अलावा अमरीका दुनिया को बेचता ही क्या खास है जो दुनिया टैरिफ के बदले टैरिफ ठोकेगी। यूरोपियन यूनियन को साल का 240 बिलियन डालर्स का अमरीका से व्यापार में फायदा पहुंचता है। क्या इसको गंवाने का साहस उनमें है। वियतनाम ने पिछले साल 123 बिलियन डालर्स अमरीका से कमाए थे। जानते हैं कि 46 प्रतिशत टैरिफ पर उनका क्या जवाब है? कहते हैं कि माई-बाप हम अपना टैरिफ शून्य कर लेंगे।चीन ने कहा है कि हम ईंट का जवाब पत्थर से देंगे। 34 प्रतिशत टैरिफ का जवाब 34 प्रतिशत टैरिफ। ट्रम्प के पहले शासनकाल में चीन पर 25 प्रतिशत का टैरिफ लगा था। चीन ने तब भी ईंट का जवाब पत्थर से ही दिया था। पर अमरीकी अर्थव्यवस्था पर एक प्वाइंट से भी कम का नुकसान हुआ था। अमरीका को खरोंच तक नहीं आई थी। पूरी दुनिया का पूरा व्यापार कुल मिला कर 33 ट्रिलियन डालर्स है। इसका करीब 17 प्रतिशत (5.4 ट्रिलियन डालर्स) अमरीका से होता है। दुनिया का 50 प्रतिशत से भी ज्यादा धंधा डालर्स में होता है। पूरी दुनिया का कर्ज 315 ट्रिलियन डालर्स का है। इस कर्ज का 64 प्रतिशत आदान-प्रदान डालर में होता है। तेल डालर में बिकता है। पूरी यूरोप की सुरक्षा का बोझ अमरीका ढोता है। अमरीका के पैसे और हथियार के बगैर नाटो की कल्पना भी नहीं की जा सकती। क्या अमरीका की सहायता के बगैर यूक्रेन युद्ध लडने की सोच भी सकता था? 80 से भी ज्यादा देशों में अमरीका के 800 मिलिट्री बेस हैं जिनसे इन देशों को सुरक्षा का कवच मिलता है। फिर भी अगर उलझोगे तो अमरीका के सैंक्शंस से कैसे निपटोगे। टैरिफ बिसात पर सिर्फ पहली चाल = पर ट्रम्प के लिए टैरिफ सिर्फ पहली चाल है। 50 देशों ने तो वैसे ही घुटने टेक दिए हैं। यह संख्या बढ़ेगी ही। हो सकता है कि कुछ देश डालर छोडने की हिम्मत जुटा लें। हो सकता है कई देश चीन की युआन करंसी में ही धंधा करें।

पर जिस तरह साइकिल के पहिए में एक धुरी होती है और कई तारें , अगर एक-दो तारें टूट भी जाएं, पहिए का चलना बंद नहीं हो जाता। फिर जो तारें टूट जाएंगी, उनसे टैरिफ से तो पैसा आएगा ही। ट्रम्प इन अलग-अलग तारों से अलग-अलग निपटेंगे। कुछ से कहेंगे कि हमारे बांडों की मैच्योरिटी बढ़ा कर 50 साल कर दो, ब्याज की दर कम होगी। कुछ से कहेंगे कि अपने सैंट्रल बैंक में जो डालर का अम्बार लगा कर बैठे हो उसे हल्का करो। पाबंदी होगी कि तुम धंधा डालर में ही करोगे। ज्ञानी कहते हैं कि राजनीति-वाजनीति में उलझना समय की बर्बादी है। पैसे की चाल देखो खेल खुद समझ में आ जाएगा। ट्रम्प भी डालर के पांसे से दुनिया के राजनीतिक ढांचे को अपनी सोच में ढालना चाह रहे हैं। उनकी सोच रूस से हाथ मिलाने की है। यूरोप को वह एक ऐसे शव की तरह मानते हैं जो उन्हें कंधे पर ढोना पड़ रहा है।

ट्रम्प लगता है मान चुके हैं कि दुनिया दो-तीन खेमों में बंट सकती है। कुछ चीन के दरबार में जा बैठेंगे। यूरोप अपना एक अलग खेमा शायद बना ले। पर जब तक डालर में धंधा है, कर्ज है, सारी सप्लाई चेन है दुनिया के हर समुद्र के हर कोने में अमरीकी मिलिट्री बेस हैं तब तक हाथी सवा सेर का ही रहेगा।-

संगठन के प्रति समर्पण तय करता है नेतृत्व

मीडियऑडीटर
Mediaauditor.in

जगदलपुर.भारतीय जनता पार्टी का जगदलपुर विधानसभा स्तरीय सक्रिय कार्यकर्ता सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। श्यामा प्रसाद मुखर्जी टाउन हॉल में कार्यकर्ता जुटे। जगदलपुर MLA और BJP प्रदेश अध्यक्ष किरण देव ने कहा कि, पद नहीं, संगठन के प्रति समर्पण ही नेतृत्व तय करता है। सरकार बन गई है, सरकार में रहते कोई भी कार्यकर्ता अहंकार न करें। विनम्र रहें। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण देव ने कहा कि भाजपा में पदाधिकारी बनने के लिए सक्रिय सदस्य बनना अनिवार्य है। हर सक्रिय सदस्य पदाधिकारी बने, यह आवश्यक नहीं, बल्कि दक्षता और कुशलता के आधार पर ही जिम्मेदारी तय की जाती है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी आज विश्व की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है। यह हमारी कार्यशैली, बैठकें, सम्मेलनों और नीतियों के साथ आपसी संवाद का ही परिणाम है। किरण देव ने कहा कि कभी हर चुनाव में कांग्रेस को जीत मिलती थी, लेकिन आज भाजपा का परचम देश के कोने-कोने में लहरा रहा है। इसका श्रेय कार्यकर्ताओं को जाता है। आप सभी सक्रिय कार्यकर्ता ही भविष्य के सांसद, विधायक और मंत्री बन सकते हैं। किरण देव ने कहा कि भाजपा के जो कार्यकर्ता आज सक्रिय रूप से पार्टी के लिए काम कर रहे हैं, वे ही भविष्य में सांसद, विधायक और मंत्री जैसे अहम पदों पर दिखाई देंगे। लेकिन इसके लिए कठिन परिश्रम और संगठन की कसौटी पर खरा उतरना जरूरी है।

नगरीय निकाय चुनावों में भाजपा ने 91 प्रतिशत से अधिक क्षेत्रों में जीत दर्ज की है। जो मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में चल रही जनकल्याणकारी योजनाओं का परिणाम है। उन्होंने कहा सरकार बनने के बाद विनम्रता बढ़नी चाहिए। हिमालय की चोटी पर पहुंचने के बाद आगे सिर्फ वायुमंडल है, इसलिए सत्ता में रहते हुए भी अहंकार नहीं आना चाहिए। बस्तर भाजपा सांसद महेश कश्यप ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा विश्व की सबसे बड़ी लोकतांत्रिक पार्टी है। संगठन सूत्र 'संघे शक्ति कलियुगे' को आधार बनाकर पार्टी को मजबूत किया गया है। भाजपा का हर कार्यकर्ता संगठन का अभिन्न अंग है। संगठन की शक्ति के कारण ही भाजपा का नाम आज विश्व में गर्व से लिया जाता है।

इस कार्यक्रम में पार्टी के वरिष्ठ नेता शिवनारायण पांडेय, विद्याशरण तिवारी, कमल चंद भंजदेव, महापौर संजय पांडेय, निगम अध्यक्ष खेमसिंह देवांगन, योगेंद्र पांडेय, गोदावरी साहू, श्रीधर ओझा, अश्विनी सरडे, रजनीश पाणिग्रही, आलोक अवस्थी, पदलाम नाग समेत अन्य कार्यकर्ता मौजूद थे।

बिलासपुर निगम सामान्य-सभा के लिए 60 प्रश्न आए

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

बिलासपुर में नगर निगम 15 अप्रैल को होने वाली सामान्य सभा की बैठक में 30 पार्षदों ने 60 सवाल तैयार किए हैं। इसमें लॉटरी के जरिए तय किया जाएगा कि कौन पार्षद सवाल पूछ सकेगा। इस दौरान एक घंटे के प्रश्नकाल में मेयर पूजा विधानी प्रश्नों का जवाब देंगी। भाजपा-कांग्रेस के पार्षदों ने गरीबों के मकान तोड़ने, पेयजल संकट, जलभराव, अवैध प्लाटिंग जैसे मुद्दों पर अफसरों और मेयर को घेरने की रणनीति बनाई है। नगर निगम के 70 पार्षदों में केवल 30 पार्षदों ने 60 सवाल पूछने के लिए अपना आवेदन जमा किया है। इसमें भाजपा के 17 पार्षद शामिल हैं, जिनमें एमआईसी मेंबर मोती गंगवानी के साथ ही सुनीता जगत और कुसुम महाबली कोसले शामिल हैं। निगम में कांग्रेस के 18 पार्षद हैं, जिनमें 13 पार्षदों ने सवाल पूछने के लिए आवेदन जमा किया है। सारे आवेदनों को एकत्रित कर शुक्रवार को लॉटरी निकाली जाएंगी। लॉटरी के जरिए ही तय होगा कि कौन पार्षद सवाल पूछ सकेगा। लॉटरी में जिन पार्षदों के सवाल पहले निकलेंगे, सदन में उनके सवालों का जवाब पहले दिया जाएगा। अल्पमत के बाद भी कांग्रेस पार्षद पहली सामान्य सभा की बैठक में निगम अफसर और मेयर पूजा विधानी को घेरने के साथ ही हंगामा मचाने की रणनीति बना रहे हैं। इसके लिए शहर की समस्याओं की जानकारी तैयार की जा रही है। सामान्य सभा की बैठक में सत्ता और विपक्षी दलों के पार्षदों ने सड़क-नाली, बिजली-पानी और आवास के अलावा जलसंकट, अवैध प्लॉटिंग, सरकारी जमीन पर कब्जा जैसे सवाल पूछा है। वार्ड 52 के पार्षद दिलीप पाटिल ने अपने वार्ड में हुए तोड़फोड़ और अवैध प्लॉटिंग पर सरकारी जमीन पर कब्जे को लेकर सवाल पूछा है। बता दें कि विधानसभा की तर्ज पर निगम की सामान्य सभा की बैठक होती है, जिसमें हर सवाल के जवाब पर बहस होती है। जवाब से संतुष्ट नहीं होने पर पार्षद पूरक प्रश्न कर सकते हैं। प्रश्नकाल के लिए 9 एजेंडे पर चर्चा होगी, फिर बजट पेश किया जाएगा। इस बार 1089 करोड़ का बजट तैयार किया गया है।

सचिव और इंजीनियर्स की रिव्यू मीटिंग

साव ने अफसरों से कहा- फील्ड पर जाइए, लापरवाह ठेकेदारों पर होगा एक्शन

मीडियऑडीटर
Mediaauditor.in

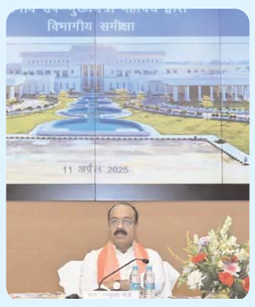

रायपुर में डिप्टी सीएम और PWD मंत्री अरुण साव ने अपने विभाग के सचिव और इंजीनियर्स के साथ बैठक की। शुक्रवार की सुबह सभी अधिकारी रायपुर के सिविल लाइंस स्थित सर्किट हाउस पहुंचे। डिप्टी ष्टरूसाव ने यहां PWD के कामों का रिव्यू किया। अफसरों से मंत्री ने चल प्रोजेक्ट की जानकारी ली, आगे आने वाले दिनों के प्रोजेक्ट के बारे में भी पूछा। बैठक में अधिकारियों के प्रेजेंटेशन के बाद मंत्री साव ने कहा- जितने भी प्रोजेक्ट चल रहे हैं, सभी की प्रोग्रेस का हर सप्ताह रिव्यू होगा। अफसर फील्ड पर उतरकर कार्यों पर कड़ी नजर रखें और गुणवत्ता सुनिश्चित करें। निर्धारित समय पर निर्माण कार्य पूर्ण करें, ठेकेदारों से समय-सीमा में काम पूरा कराएं। ऐसा न करने वालों पर एक्शन होगा। मंत्री ने डिपार्टमेंट के इंजीनियर्स से कहा- विभागीय कार्यों के बेहतर, जल्द और प्रभावी क्रियान्वयन के लिए सभी अभियंता अपनी इंजीनियरिंग और प्रशासनिक कौशल का दक्षता के साथ उपयोग करें। अपनी योग्यता और क्षमता का फील्ड में पूर्ण उपयोग करते हुए निर्माण कार्यों में गुणवत्ता और समय-सीमा सुनिश्चित करें। उप-मुख्यमंत्री और लोक निर्माण मंत्री अरुण साव की अध्यक्षता में चल रही इस बैठक में लोक निर्माण विभाग के सचिव डॉ. कमलप्रीत सिंह और प्रमुख अभियंता वी.के. भतपहरी सहित दूसरे जिलों से भी PWD के अधिकारी पहुंचे।

बिलासपुर 14 साल की लड़की से रेप

शादीशुदा ड्राइवर ने शादी का झांसा देकर किया दुष्कर्म, बजरंग दल ने कहा- ये लव-जिहाद

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

पुलिस की गिरफ्त में आने के बाद आरोपी ने पानी पीने के दौरान ढक्कन भी निगल लिया, जिससे उसकी तबीयत बिगड़ गई। बिलासपुर में 14 साल की नाबालिग से दुष्कर्म की शिकायत सिरगिट्टी थाने में दर्ज हुई है। ये शिकायत नाबालिग की मां ने ही कराई है। महिला का आरोप है कि, शादीशुदा हार्दिक खान ने बेटी को 2-3 दिन से बंदी बनाकर रखा था और उसके दुष्कर्म किया। जानकरी मिलने पर बजरंग दल के कार्यकर्ता भी थाने पहुंचे। उनका आरोप है कि, ये लव जिहाद का मामला है। इस पर सख्त कार्रवाई की जाए। फिलहाल पुलिस ने केस दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है।दरअसल, 14 साल की लड़की से ड्राइवर युवक ने पहले दोस्ती की।

शादीशुदा होने के बाद भी उसने लड़की को शादी करने का झांसा दिया। इसके बाद उसके साथ दुष्कर्म किया। लड़की ने अपनी मां को पूरी घटना की जानकारी दी, जिसके बाद परिजन के साथ वो थाने पहुंची। लड़की ने पढ़ाई छोड़ दी है। वहीं, आरोपी हार्दिक खान बिलासपुर रेलवे में ड्राइवर के पद पर पदस्थ है और उसके दो बच्चे भी हैं। आरोपी का नानी के घर पर आना जाना था। इसके चलते लड़की की उससे जान-पहचान थी। हार्दिक उसके घर भी आता-जाता था। इसी दौरान उसने लड़की से दोस्ती कर ली। इसके बाद उसने लड़की से प्यार का इजहार किया और उसके साथ शादी करने का वादा किया। लड़की बीते 7 अप्रैल को अपनी नानी के घर रहने गई थी। इस दौरान उसकी मां किसी काम से ओडिशा गई थी। इसकी जानकारी होने पर ड्राइवर हार्दिक भी पहुंच गया। नानी के घर में 8 और 9 अप्रैल को उसने शादी करने की बात कहते हुए लड़की के साथ दुष्कर्म किया। साथ ही घटना की जानकारी परिजन को देने पर जान से मारने की धमकी भी दी।

मां लौटी तो बताई घटना

इस बीच 10 अप्रैल को लड़की की मां ओडिशा से वापस आई, तब उसने घटना की जानकारी अपनी मां को दी। मामला सामने आने के बाद परिजन उसे लेकर थाना पहुंचे। परिजन ने पुलिस को बताया कि आरोपी युवक पहले से ही शादीशुदा है। इसके बाद भी सब जानते हुए उसने नाबालिग लड़की को फंसाया है।आरोपी की धमकी से उनकी बेटी डरी-सहमी रही और नानी को घटना की जानकारी भी नहीं दी।

आरोपी ने निगल लिया ढक्कन

टीआई रजनीश सिंह ने बताया कि, आरोपी की पतासाजी कर उसे पकड़ लिया गया है। पुलिस की गिरफ्त में आने के बाद वह पीने के लिए पानी मांगा, जब उसे बॉटल में पानी दिया गया, तब उसने पानी के साथ ढक्कन भी निगल गया, जिससे उसकी तबीयत बिगड़ गई।

परिजन ने किया .हंगामा

पुलिस ने उसे इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है। वहीं, आरोपी अस्पताल में भर्ती होने पर उसके परिजन भी वहां पहुंचे। उन्होंने पुलिस पर पहले जानकारी नहीं देने का आरोप लगाया और जमकर हंगामा मचाया।

भीषण गर्मी में पशुओं की प्यास बुझाने की पहल

मीडिया ऑडीटर
Mediaauditor.in

कोरिया जिले के बैकुंठपुर क्षेत्र में भीषण गर्मी के मौसम में आवारा पशुओं की प्यास बुझाने के लिए एक सराहनीय पहल की गई है। स्थानीय लोगों के सहयोग से 75 पानी के नाद की व्यवस्था की गई है, जिनकी कुल कीमत 27 हजार रुपए है। गौ रक्षक अनुराग दुबे ने सभी सहयोगियों का आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि नाद में नियमित रूप से पानी भरना भी जरूरी है। उन्होंने लोगों से अपील की है कि केवल नाद लगाना ही काफी नहीं है, उनमें पानी भरने की जिम्मेदारी भी लेनी होगी।जो लोग पशुओं के लिए निःशुल्क नाद प्राप्त करना चाहते हैं, उनके लिए संपर्क नंबर भी जारी किया गया है। इन नंबरों में संपर्क कर सकते हैं। 8770718237, 9977667123, 91117 14184, 7987883924। इस पहल में कई स्थानीय नेताओं और समाजसेवियों ने योगदान दिया है। नगर पालिका उपाध्यक्ष आशीष यादव, आशीष डबरे और ज्ञानेंद्र शुक्ला जानी ने 10-10 नाद दिए हैं। विपिन मिश्रा, अनमोल पाल और महामाया डेरी के संचालक नयन केवलानी ने भी 10-10 नाद की व्यवस्था की है। आयुष नामदेव ने 5 नाद और गौ रक्षक अनुराग दुबे ने 10 नाद दान किए हैं।

जिला अस्पताल में डॉक्टर और स्टाफ गायब

संभाग आयुक्त ने जताई नाराजगी

मीडिया ऑडीटर
Mediaauditor.in

बिलासपुर. जिला अस्पताल में शुक्रवार सुबह 10 बजे तक डेंटल और आर्थोपेडिक डॉक्टर समेत सहयोगी स्टाफ अनुपस्थित मिले। इसी दौरान निरीक्षण पर पहुंचे संभाग आयुक्त महादेव कावरे ने इस पर कड़ी नाराजगी जताई। वहीं, निरीक्षण के दौरान कलेक्टोरेट के खाद्य शाखा में धान मिलान की धीमी प्रगति पर नाराजगी व्यक्त की। सहायक वर्ग-2 भारती सिंह को सेवा पुस्तिका और कैश बुक के अपूर्ण रखरखाव पर कारण बताओ नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। आयुक्त ने अस्पताल के वार्डों का दौरा किया। उन्होंने मरीजों से स्वास्थ्य सुविधाओं की जानकारी ली। पोषण पुनर्वास केंद्र में 19 कुपोषित बच्चों की देखरेख की व्यवस्था का जायजा लिया। मरीजों के लिए बन रहे भोजन की गुणवत्ता भी परखी। आयुक्त ने कलेक्टर न्यायालय, नाजिर शाखा, वित्त शाखा, रिकॉर्ड रूम, खाद्य शाखा, खनिज शाखा और कोषालय का निरीक्षण किया। अभिलेखों में पाई गई कमियों को एक सप्ताह में दूर करने के निर्देश दिए। अर्थदंड की वसूली के लिए विशेष अभियान चलाने और रिक्त पदों की भर्ती प्रक्रिया शीघ्र पूरी करने को कहा। निरीक्षण के दौरान निगम आयुक्त अमित कुमार, जिला पंचायत सीईओ संदीप अग्रवाल, एडीएम आरए कुरूवंशी, शिवकुमार बनर्जी और सिविल सर्जन डॉ. अनिल गुप्ता मौजूद रहे।

खनिज विभाग ने रचा नया कीर्तिमान

मनेंद्रगढ़ को 78.92 करोड़ का राजस्व मिला; अवैध खनन से 42.73 लाख अर्थदंड की वसूली

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर जिले के खनिज विभाग ने वित्तीय वर्ष 2024-25 में राजस्व प्राप्ति के क्षेत्र में नया कीर्तिमान स्थापित किया है। संचालनालय भौमिकी एवं खनिकर्म, अटल नगर नवा रायपुर ने जिले के लिए 75 करोड़ रुपए का वार्षिक राजस्व लक्ष्य तय किया था। विभाग ने 78.92 करोड़ रुपए की राजस्व वसूली कर 105 प्रतिशत की उपलब्धि हासिल की। यह सफलता विभाग की योजनाबद्ध कार्यशैली और सतत निगरानी का परिणाम है। खनिज विभाग ने कोयला, गिट्टी और रेत जैसे खनिजों की नियमित निगरानी की। विभाग ने अवैध खनन गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी। इस दौरान 186 अवैध प्रकरणों में कार्रवाई की गई। विभाग ने 42.73 लाख रुपए का अर्थदंड वसूल किया।

इस उपलब्धि में खनिज अधिकारी दयानंद तिग्गा के नेतृत्व में पूरी टीम का योगदान रहा। टीम में खनि निरीक्षक आदित्य मानकर, खनिज सुपरवाइजर सुंदरलाल साहू और अन्य कर्मचारियों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह उपलब्धि जिले की आर्थिक प्रगति में मील का पत्थर साबित हो रही है।

बेटे ने मां-चाची को 10 रुपए के सिक्कों से तौला, 20 साल बाद पूरी की मन्नत

मीडिया ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

जगदलपुर छत्तीसगढ़ के जगदलपुर में एक बेटे ने अपनी मां और चाची को 10 रुपए के सिक्कों से तौल दिया। 10-10 रुपए के सिक्कों की कुल रकम 1 लाख 55 हजार 800 रुपए निकली। 20 साल बाद एक मन्नत के रूप में ये काम किया गया है। इस दौरान मां के आंसू छलक पड़े। दरअसल, जगदलपुर में शांति नगर के रहने वाले विपिन शुक्ला (53 साल) चाट का बिजनेस करते हैं। जगदलपुर के गोल बाजार के पास इनकी चाट की दुकान है। विपिन ने कहा कि, 20 साल पहले आर्थिक स्थिति बिल्कुल ठीक नहीं थी। पैसों के लिए काफी परेशान हुआ करता था। नया बिजनेस शुरू किया और मन्नत मांगी थी। अब जब मेरी मन्नत हुई तो घर में पूजा रखी। विपिन ने रिश्तेदारों को बुलाया और एक बड़ा सा तराजू रखा। इसमें उन्होंने अपनी मां और चाची को 10 के सिक्कों से तौला। इसके लिए कुल 1 लाख 55 हजार 800 रुपए लगे। विपिन ने बताया कि, उनके पिता और चाचा दोनों नहीं हैं। मां के साथ चाची ने भी बहुत कुछ किया है। इन्हीं के आशीर्वाद से मेरा सब कुछ ठीक रहा। इसलिए मैंने मन्नत पूरी की। डेढ़ लाख से ज्यादा की रकम वाले 10 के सिक्कों का कुल वजन 150 किलो से ज्यादा था। हालांकि विपिन की माताजी का वजन 65 और चाची का वजन 54 किलो ही था। फिर भी विपिन ने बराबर से भी ज्यादा सिक्कों में उन्हें तौला। विपिन ने बताया कि, उनके कुल 7 भांजे (बहन के बच्चे) हैं। अब इन पैसों को अपने 7 भांजों को बराबर बांट दूंगा। विपिन की मां सत्यवती शुक्ला (81 साल) ने कहा कि, मैं किस्मत वाली हूं। आज कलयुग में बच्चे अपने बूढ़े मां-बाप को वृद्धाश्रम छोड़ जाते हैं। मेरा बेटा मेरी सेवा करता है। वहीं चाची शारदा शुक्ला ने भी कहा कि, ये पहला भतीजा होगा जिसने इस चाची के लिए भी सोचा है।

अंबिकापुर में युवक की हत्या कर नाली में फेंका शव,फूल व्यवसायी के गोदाम में सोया था युवक

मीडिया ऑडीटर
Mediaauditor.in

सरगुजा. अंबिकापुर के नमनाकला में फूल व्यवसायी के मकान में रहकर काम करने वाले युवक का शव घर के बाहर नाली में पड़ा हुआ मिला। युवक के कमरे में खून के निशान मिले हैं। युवक के साथ कमरे में सोने गया फूल व्यवासयी का भाई फरार है। पुलिस फूल व्यवसायी को हिरासत में लेकर झारखंड गई है। युवक के परिजनों ने हॉस्पिटल में युवक के शव ले जाने से इनकार कर दिया और घंटों बैठे रहे। मामला कोतवाली थाना क्षेत्र का है। जानकारी के मुताबिक, अंबिकापुर में फूल व्यवसायी बीरबल यादव के साथ दरिमा थाना अंतर्गत ग्राम खजुरी, नावानगर निवासी जुगनू यादव (25 साल) पिछले 7 सालों से काम कर रहा था। वह बीरबल यादव के नमनाकला झंझटपारा स्थित घर में रहता था। शुक्रवार सुबह जुगनू यादव का शव नाली में औंधे मुंह पड़ा मिला। घटना की सूचना पर कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची। बीरबल यादव ने ही जुगनू यादव की पहचान की। कोतवाली थाना प्रभारी मनीष सिंह परिहार के साथ फारेंसिक एक्सपर्ट कुलदीप कुजूर की टीम ने मौके पर पहुंचकर जांच की। बीरबल यादव ने बताया कि रात 10 बजे जुगनू यादव एवं उसके भाई संजू यादव ने साथ खाना खाया था। इसके बाद जुगनू यादव और संजू यादव दोनों गोदाम में सोने चले गए थे। जुगनू यादव गोदाम में ही रहता था। बीरबल यादव को लोगों ने सुबह शव मिलने पर उठाया। उसने ही जुगनू यादव के शव की शिनाख्त भी की। बीरबल यादव के भाई संजू यादव की खोजबीन की गई तो वह फरार मिला। गोदाम में खून के छींटे मिले हैं। गोदाम में हत्या के बाद शव को नाली में फेंका गया है। फारेंसिक एक्सपर्ट कुलदीप कुजूर ने बताया कि जुगनू यादव की हत्या सोते समय की गई है। उसके सिर एवं जबड़े को ईंट से कुचला गया है। उसके दांत भी टूट गए हैं। घटनास्थल से नाली तक शव को घसीटने के निशान नहीं मिले हैं। शव को उठाकर नाली में फेंका गया है। कोतवाली पुलिस ने फरार संजू यादव की खोजबीन शुरू की तो उसका लोकेशन झारखंड में मिला। कोतवाली पुलिस ने बीरबल यादव को हिरासत में लिया और उसे लेकर झारखंड गई है। संदेही के पकड़े जाने के बाद ही मामले में पुलिस आगे बढ़ सकेगी। घटना के बाद पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल पहुंचा तो वहां मृतक जुगनू यादव के चाचा इंद्रजीत यादव एवं अन्य परिजनों ने पोस्टमॉर्टम के बाद शव ले जाने से इनकार कर दिया। परिजनों ने कहा कि उन्हें घटनास्थल नहीं दिखाया गया। बीरबल यादव से बात नहीं करने दिया गया। परिजन घंटों हॉस्पिटल में बैठे रहे। दोपहर 2 बजे मौके पर सीएसपी रोहित शाह भी पहुंचे और परिजनों से बात की। इसके बाद परिजन पोस्टमॉर्टम के लिए तैयार हुए। पुलिस फिलहाल घटना की जांच कर रही है।

सुशासन तिहार में युवक ने ससुराल जाने मांगी बाइक 'छत्तीसगढ़ ऑटो एजेंसी' के नाम सौंपा आवेदन

ऑडीटर ऑडीटर(निप्र)
Mediaauditor.in

सरगुज.छत्तीसगढ़ में सुशासन तिहार के तहत 8 अप्रैल से लगाए जा रहे शिविरों में अजीब मांग वाले आवेदन भी मिल रहे हैं। सरगुजा जिले के मैनपाट में एक युवक ने शिविर में आवेदन दिया है कि उसकी ससुराल और हॉट बाजार दूर है। उसे ससुराल और हाट बाजार जाने के लिए बाइक दिलाई जाए। यह आवेदन शिविर में जमा हो गया है, जो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। छत्तीसगढ़ में सुशासन तिहार की शुरुआत की गई है। पहले चरण में 08 अप्रैल से 11 अप्रैल तक गांवों में शिविर लगाकर आवेदन लिए जा रहे हैं। सुशासन तिहार में मैनपाट ब्लॉक के कदनई पंचायत के युवक अजेश कुमार ठाकुर ने आवेदन देकर अपने लिए बाइक मांगी है, ताकि वह ससुराल और हॉट बाजार जा सके। युवक ने आवेदन में लिखा है कि उसे ससुराल जाने और हॉट बाजार जाने के लिए एक बाइक की आवश्यकता है, क्योंकि उसके गांव से ससुराल और हाट बाजार दूर है। आवेदन में संबंधित विभाग का नाम छत्तीसगढ़ शासन ऑटो एजेंसी लिखा गया है। यह आवेदन 10 अप्रैल को कदनई पंचायत के शिविर में जमा किया गया है।आवेदक अगेश कुमार ठाकुर ने बताया कि उसकी शादी नवानगर दरिमा के पास गांव में हुई है। बाजार भी दूर है, जहां जाने में दिक्कत होती है, इसलिए बाइक की मांग शासन से की है। अगेश कुमार ठाकुर ने पांचवीं तक पढ़ाई की है और स्वयं खेती का काम करता है। उसने यह आवेदन एक परिचित युवक ने लिखवाना बताया है। मैनपाट जनपद सीईओ कुबेर सिंह ने कहा कि ऐसा आवेदन मिला है। आवेदन को निराकरण के लिए भेजा जाएगा। हालांकि, ऐसा कोई प्रावधान किसी योजना में नहीं है। आवेदन में तकनीकी त्रुटियां भी हैं। छत्तीसगढ़ शासन ऑटो एजेंसी नाम का कोई विभाग नहीं है। सरगुजा कलेक्टर विलास भोसकर रविवार को मैनपाट ब्लॉक के ग्राम पंचायत बिसरपानी, लुरेना, सरभंजा, केसरा और कुदारीडीह पहुंचे और सुशासन तिहार के शिविरों का निरीक्षण किया।

अहमदाबाद की हाई राइज बिल्डिंग में लगी आग

अहमदाबाद (एजेंसी)। अहमदाबाद के खोखरा इलाके में आज एक हाई राइज बिल्डिंग की चौथी फ्लोर में आग लग गई। हालांकि, समय रहते ही फायर ब्रिगेड की टीम ने वहां, फंसे सभी 18 लोगों का रेस्क्यू कर लिया। मौके पर ब्रिगेड की 7 गाड़ियां मौजूद हैं। फिलहाल आग पर काबू पाने की कोशिश की जा रही है। फायर ब्रिगेड को आग की सूचना दी गई। इसी बीच स्थानीय लोगों ने चौथी मंजिल पर फंसे बच्चों को बचाने की कोशिश की। इसी दौरान एक बच्ची नीचे गिरने से बाल-बाल बच गई। हालांकि, स्थानीय लोगों की भीड़ ने नीचे भी रेस्क्यू के शुरुआती इंतजाम कर रखे थे। सूचना मिलने के बाद मणिनगर फायर स्टेशन से टीम मौके पर पहुंची। मणिनगर फायर स्टेशन से तीन दमकल गाड़ियां और एक हाइड्रोलिक प्लेटफॉर्म (सीढ़ी) भी मंगवाई गई। लोगों को रेस्क्यू करने के दोरान ही फायर ब्रिगेड की एक टीम घटनास्थल पर पहुंची तो पाया कि आग किसी घर में नहीं, बल्कि इलेक्ट्रिक कुकर में लगी थी, जिससे चारों ओर धुआं फैल गया था।

यूपी-बिहार में बारिश-बिजली का कहर, 83 मौतें

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में मौसम की दोहरी मार जारी है। एक तरफ तेज गर्मी और दूसरी तरफ आंधी-तूफान और बारिश का कहर है। यूपी-बिहार में 10 अप्रैल को आंधी-तूफान के कारण 83 लोगों की मौत हो गई। इसमें 61 मौतें बिहार में और 22 मौतें यूपी में हुईं। एयर इंडिया आंधी और तेज हवाओं के कारण एडवाइजरी जारी की है। एयरलाइन ने कहा कि उत्तरी भारत के कई हिस्सों में फ्लाइट्स प्रभावित हैं। दिल्ली से आने-जाने वाली हमारी कुछ फ्लाइट्स लेट हैं और कुछ को डायवर्ट किया गया है। इसका असर ओवरऑल फ्लाइट शेड्यूल पर भी पड़ सकता है।

जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ में एक आतंकी मारा गया

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के किश्तवाड़ जिले के घने जंगलों में चल रहे एनकाउंटर में सुरक्षाबलों ने शुक्रवार को एक आतंकी मार गिराया है। 2-3 आतंकियों को अभी सुरक्षाबलों ने घेर रखा है। एनकाउंटर जारी है। अभी तक किसी सुरक्षाकर्मी के घायल होने की खबर नहीं है। सुरक्षा बलों ने 9 अप्रैल को चत्रू जंगल के इलाके में संदिग्ध गतिविधि देखी थी, जिसके बाद आतंकियों और सुरक्षाबलों के बीच फायरिंग शुरू हुई थी। यहां बड़ी तादाद में सुरक्षा बल तैनात हैं। आसपास के गांवों में भी अलर्ट है। स्थानीय लोगों से भी सतर्क रहने और संदिग्ध गतिविधि की सूचना देने की अपील की गई है। इससे पहले 4 और 5 अप्रैल की दरमियानी रात जम्मू में एलओसी पर आरएस पुरा सेक्टर पर एलओसी के जवानों ने एक पाकिस्तानी घुसपैठिए को मार गिराया था। वहीं, 1 अप्रैल को एलओसी पर सेना के एनकाउंटर में 4-5 पाकिस्तानी घुसपैठियों को मारा गया था।

मोदी बोले- सेवा की भावना सरकार की नीति और निष्ठा

अशोक नगर/ग्वालियर (एजेंसी)। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि दुनिया में भौतिक उन्नति के बीच मानवता के लिए युद्ध, संघर्ष और मानवीय मूल्यों से जुड़ी कई चिंताएं हमारे सामने हैं। इनकी जड़ में क्या है। इनकी जड़ में अपने और पराए की मानसिकता है। ये मानसिकता मानव से मानव को दूर करती है। आज विश्व भी सोच रहा है कि इनका समाधान कहां मिलेगा। इनका समाधान अद्वैत के विचार में मिलेगा। अद्वैत यानी यहां कोई द्वैत नहीं है। प्रधानमंत्री मोदी शुक्रवार को मध्यप्रदेश के अशोकनगर के ईसागढ़ स्थित श्री आनंदपुर धाम पहुंचे। यहां उन्होंने परमहंस अद्वैत मत के तीन प्रमुख मंदिरों के दर्शन किए। उन्होंने आनंद सरोवर में पुष्प अर्पित किए। इसके बाद मोती हॉल पहुंचकर परमहंस अद्वैत मत के वर्तमान गुरु से मुलाकात की और फिर सत्संग हॉल में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित भी किया। पीएम मोदी के साथ राज्यपाल मंगुभाई पटेल, सीएम डॉ. मोहन यादव, केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया और प्रदेश बीजेपी अध्यक्ष वीडी शर्मा मौजूद रहे।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा- जिस भूमि का कण-कण संतों की तपस्या से सींचा गया हो, जहां परमार्थ एक परंपरा बन चुका हो, जहां सेवा के संकल्प मानवता के कल्याण का पथ प्रशस्त करते हों, वो धरती साधारण नहीं है। इसलिए हमारे संतों ने अशोक नगर के बारे में कहा था कि यहां शोक आने से डरता है।

प्रधानमंत्री ने कहा- हमारा भारत ऋषियों, मनीषियों और संतों की धरती है। जब-जब हमारा भारत,

हमारा समाज किसी मुश्किल दौर से गुजरता है, कोई न कोई ऋषि, मनीषी इस धरती पर अवतरित होकर समाज को नई दिशा देता है। हम पूज्य स्वामी अद्वैतानंद महाराज जी के जीवन में भी इसकी झलक देख सकते हैं।

एमपी सरकार अभी से ही उज्जैन सिंहस्थ की तैयारी में जुट गई है। हम देश में राम वन गमन पथ का विकास कर रहे हैं। इसका अहम हिस्सा एमपी से होकर गुजरेगा। एमपी पहले से ही अजब और गजब है। इन कार्यों से उसकी पहचान और मजबूत होगी।

पीएम मोदी ने कहा- 2047 तक विकसित भारत बनने का लक्ष्य तय किया है। हमें विश्वास है, इसे हासिल करेंगे। विकास की दौड़ में कई देश अपनी संस्कृति से कट गए, अपनी परंपराएं भुला दी। भारत में हमें इन्हें संरक्षित करके रखना है। हमारी संस्कृति हमारे सामर्थ्य को मजबूत करती है। पीएम मोदी ने कहा- अशोकनगर और आनंदपुर धाम जैसे क्षेत्र जिन्होंने देश को इतना कुछ दिया है। इनका विकास भी हमारी जिम्मेदारी है। इस क्षेत्र को कला संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य का वरदान प्राप्त है।

यहां विकास और विरासत की असीम संभावनाएं है। इसलिए हम एमपी और अशोकनगर में विकास की गति को बढ़ा रहे हैं।

पति के टुकड़े करने वाली मुस्कान डेढ़ महीने की प्रेग्नेंट

मेरठ (एजेंसी)। मेरठ में सौरभ हत्याकांड की आरोपी मुस्कान 5-7 हफ्ते की प्रेग्नेंट है। शुक्रवार सुबह उसे कड़ी सुरक्षा के बीच लाला लाजपत राय मेडिकल कॉलेज लाया गया। हाई सिक्योरिटी में मुस्कान का अल्ट्रासाउंड कराया गया। वह करीब 2 घंटे जेल से बाहर रही। वरिष्ठ जेल अधीक्षक डॉ. वीरेश राज शर्मा ने बताया- जिला जेल के महिला बैरक की दो कैदियों को चेकअप और कुछ टेस्ट के लिए मेडिकल कॉलेज भेजा गया था। मुस्कान और संगीता दोनों का अल्ट्रासाउंड कराया गया। जिसमें मुस्कान डेढ़ महीने और संगीता 3 महीने की प्रेग्नेंट मिली हैं।

तमिलनाडु में एनडीए की वापसी

चेन्नई (एजेंसी)। गृहमंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को चेन्नई में भाजपा और एआईएडीएमके के गठबंधन का ऐलान किया। उन्होंने कहा 2026 में तमिलनाडु विधानसभा चुनाव एआईएडीएमके प्रमुख ई पलानीस्वामी के नेतृत्व में लड़ा जाएगा। सीटों का बंटवारा बाद में चर्चा के बाद तय किया जाएगा।

शाह ने कहा कि गठबंधन को लेकर एआईएडीएमके की कोई डिमांड नहीं है, न ही भाजपा उनके अंदरूनी मामलों में

कोई हस्तक्षेप करेगी। पार्टी का एनडीए में शामिल होना दोनों के लिए ही बहुत फायदेमंद है। शाह बोले- अगला चुनाव एनडीए सरकार के भ्रष्टाचार, दलितों पर, महिलाओं पर अत्याचार के आधार लड़ा जाएगा। लोग डीएमके से घोटालों पर जवाब मांग रहे हैं, चुनाव में इन्हीं मुद्दों पर जनता वोट देगी।

सितंबर 2023 में तत्कालीन तमिलनाडु प्रमुख अन्नामलाई की गई कुछ टिप्पणियों के कारण अखिल भारतीय अन्ना द्रविड़ मुनेत्र कड़गम एनडीए से अलग हो गई थी।प्रेस कॉन्फ्रेंस में एक सवाल के जवाब में शाह ने कहा कि कुछ मुद्दों पर एआईएडीएमके के अलग-अलग रुख हैं। लेकिन इस पर हम बैठकर चर्चा करेंगे, जरूरत पड़ी तो न्यूनतम साझा कार्यक्रम (कॉमन मिनिमम प्रोग्राम,) भी होगा।

टॉप-सीक्रेट मिशन के तहत भारत लाया गया आतंकी तहव्वुर राणा

नई दिल्ली (एजेंसी)। 2008 मुंबई आतंकी हमले के मास्टरमाइंड 64 साल के तहव्वुर राणा को 10 अप्रैल को स्पेशल विमान से अमेरिका से भारत लाया गया। राणा का प्रत्यर्पण टॉप-सीक्रेट मिशन ऑपरेशन राणा के तहत हुआ। ऑपरेशन के दौरान जब राणा को अमेरिका से फ्लाइट में भारत लाया जा रहा था, जब एनआईए का एक अधिकारी पूरे रास्ते उसका हाथ पकड़कर बैठा रहा। ऐसा इसलिए ताकि तहव्वुर राणा खुद को कोई नुकसान न पहुंचा सके। राणा अभी 18 दिन की एनआईए कस्टडी में है, जहां उससे पूछताछ की जाएगी। भारत लाए जाने के बाद उसे दिल्ली की पटियाला हाउस कोर्ट में पेश किया गया था। जहां एनआईए ने उसकी कस्टडी मांगी थी। राणा ने मुंबई 26/11 अटैक के मुख्य आरोपी डेविड कोलमैन हेडली की मदद की थी। 26 नवंबर 2008 को मुंबई में आतंकवादी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के 10 आतंकियों ने हमले किए। ये हमले चार दिनों तक चले। इन हमलों में कुल 175 लोग मारे गए, जिनमें 9 हमलावर भी शामिल थे और 300 से अधिक लोग घायल हुए।

पीएम ने एयरपोर्ट पर ही मांगी गैंगरेप केस की जानकारी

वाराणसी (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी शुक्रवार सुबह 10 बजकर 7 मिनट पर अपने 50वें दौरे पर वाराणसी पहुंचे। एयरपोर्ट पर उतरते ही पीएम ने पुलिस कमिश्नर मोहित अग्रवाल से छात्रा से गैंगरेप केस को लेकर सवाल-जवाब किए। उन्होंने कमिश्नर से वारदात की पूरी जानकारी ली। कहा- सभी दोषियों पर सख्त एक्शन हो। साथ ही, ऐसी घटना दोबारा न होने पाए। यह घटना 15 दिन पहले की है। कमिश्नर ने पीएम मोदी को केस की पूरी स्टेटस रिपोर्ट बताई। उन्होंने कहा कि इस मामले में मुख्य आरोपी समेत 9 लोगों को जेल भेजा जा चुका है। तीन और आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। मुख्य आरोपी का कैफे सील कर दिया गया है। दरअसल, वाराणसी में ग्रेजुएशन की छात्रा से 29 मार्च को 23 लड़कों ने 7 दिन तक गैंगरेप किया था, फिर उसे सड़क

पर फेंक कर भाग गए थे। छात्रा बदहवास हालत में घर पहुंची और दो दिन तक बेहोश रही थी। एयरपोर्ट से पीएम हेलिकॉप्टर से मेहंदी गंज पहुंचे। यहां सीएम योगी ने उनका स्वागत किया। उन्हें कमल छतरी भेंट की। पीएम ने यहां 3,884 करोड़ के 44 प्रोजेक्ट्स का लोकार्पण और शिलान्यास किया।

शिक्षक भर्ती घोटाला, बर्खास्त शिक्षकों का पैदल मार्च

कोलकाता (एजेंसी)। प्रदर्शन के दौरान शिक्षकों ने हाथों में तख्तियां लेकर नारे लगाए और बहाली की मांग की। कई सामाजिक संगठनों ने भी इस आंदोलन में कर्मचारियों का साथ दिया। पश्चिम बंगाल के शिक्षक भर्ती घोटाले में नौकरी गंवा चुके टीचर्स और नॉन टीचिंग स्टाफ शुक्रवार को सड़कों पर उतर आए। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद जिन 25,753 टीचर्स और नॉन टीचिंग स्टाफ की नियुक्ति को अवैध बताया गया, उनमें से कई ने कोलकाता के साल्ट लेक इलाके से स्कूल सर्विस कमीशन तक मार्च किया। प्रदर्शनकारियों ने स्पष्ट परीक्षा की शीट को सार्वजनिक करने की मांग की है, ताकि योग्य उम्मीदवारों की पहचान हो सके। प्रदर्शन के दौरान शिक्षकों ने हाथों में तख्तियां लेकर नारे लगाए और बहाली की मांग की। कई सामाजिक संगठनों ने भी इस आंदोलन में कर्मचारियों का साथ दिया। 10 अप्रैल को बर्खास्त कर्मचारियों ने पुलिस कार्रवाई के विरोध में भूख हड़ताल करने का ऐलान किया था। टीचर्स 9 अप्रैल की रात से ही पश्चिम बंगाल स्कूल सर्विस कमीशन के कार्यालय के बाहर प्रदर्शन कर रहे थे।

टोल बंद होने से 1638.85 करोड़ का नुकसान

अमृतसर (एजेंसी)। पंजाब में बार-बार टोल प्लाजा को जबरन बंद किए जाने को लेकर केंद्र सरकार ने गहरी नाराजगी जताई है। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय ने इस मुद्दे पर पंजाब के मुख्य सचिव के एपी सिन्हा को पत्र लिखकर बताया कि अक्टूबर 2020 से नवंबर 2024 के बीच इस तरह की घटनाओं के कारण केंद्र सरकार को 1 हजार 638.85 करोड़ रुपए का भारी नुकसान उठाना पड़ा है। 4 अप्रैल को लिखे गए इस पत्र में मंत्रालय के सचिव वी. उमाशंकर ने कहा कि टोल वसूली में बार-बार आने वाले रुकावटों के कारण नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया यानी एनएचएआई की परियोजनाओं के निर्माण और रखरखाव पर बुरा असर पड़ा है।

इसके साथ ही केंद्र इस घाटे की भरपाई राज्य सरकार से करने पर भी विचार कर रहा है। चीमा बोले- केंद्र सरकार को ही भरपाई करनी चाहिए वहीं, इस मामले को लेकर अब वित्त मंत्री हरपाल चीमा का भी बयान आया है। हरपाल चीमा ने कहा है कि टोल प्लाजा की बंदी किसानों की मांगों के चलते हुई है, और ये मांगें केंद्र सरकार से संबंधित हैं।

ऐसे में नुकसान की भरपाई भी केंद्र सरकार को ही करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार किसानों के साथ संवाद के पक्ष में रही है, लेकिन यह मामला राष्ट्रीय नीति से जुड़ा है, इसलिए केंद्र को ही इसका समाधान निकालना होगा।

26/11 मुंबई हमला,चश्मदीद बोला- आतंकी ने मुझ पर बंदूक तानी थी

मुंबई (एजेंसी)। 26/11 मुंबई हमलों के चश्मदीद मोहम्मद तौफीक ने कहा कि किसी को भी किसी की हत्या करने का अधिकार नहीं है। मैं मुसलमान हूं, राणा भी मुसलमान है। किसी को किसी की हत्या करने का अधिकार नहीं है। हड्ड के साथ इंटरव्यू में मुंबई हमलों आरोपी तहव्वुर हुसैन राणा को भारत लाए जाने पर तौफीक ने ये बात कही।

एनआईए के साथ इंटरव्यू में तौफीक ने कहा- मैंने फिल्मों या टीवी पर भी ऐसा कुछ नहीं देखा था। मैंने एक आदमी को देखा, जिसकी लंबाई मेरी ही तरह थी। एक बैग और बंदूक लेकर मेरी ओर आ रहा था। उसने मेरे साथ गाली-गलौज की और मुझ पर बंदूक तान दी। तभी मुझे एहसास हुआ कि वह आदमी आतंकी था। मैंने पुलिस हेल्पलाइन नंबर पर कॉल किया, मैंने अपने घर पर भी फोन किया था।

एक घंटे चला कांग्रेस का प्रदर्शन

पटना (एजेंसी)। सीएम हाउस का घेराव करने निकले कांग्रेसियों का प्रदर्शन महज एक घंटे में खत्म हो गया। सीएम हाउस से 3 किमी पहले ही पुलिस ने कांग्रेसियों को रोक दिया। राजापुर पुल के पास पुलिस और प्रदर्शनकारियों में थोड़ी देर नोकझोंक हुई। इस दौरान वाटर कैनन के जरिए भीड़ को कंट्रोल किया।

इधर, प्रदर्शन में शामिल होने आए राजस्थान के पूर्व

डिप्टी सीएम सचिन पायलट चंद कदम चलकर वापस लौट गए। कन्हैया कुमार और यूथ कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष उदय भान को पुलिस ने हिरासत में लेकर कोतवाली थाने पहुंची। हालांकि, दोनों को एक घंटे बाद छोड़ दिया गया।

कन्हैया कुमार ने कहा कि सैकड़ों कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया गया। सूचना मिली कि पुलिस ने लाठीचार्ज भी किया है। सवाल यह उठता है कि हम नौकरी मांग रहे है, लाठी या वाटर कैनन नहीं। नौकरी दे देंगे तो युवाओं को सड़कों पर उतर कर प्रदर्शन करने की जरूरत ही नहीं होगी।

दिल्ली में प्रॉपर्टी डीलर की गोली मारकर हत्या

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में शुक्रवार को अज्ञात बदमाशों ने प्रॉपर्टी डीलर की गोली मारकर हत्या कर दी। घटना पश्चिम विहार वेस्ट थाना क्षेत्र स्थित स्टेट बैंक नगर की है। बदमाशों ने कार को निशाना बनाकर 8 से 10 राउंड गोलियां चलाईं। वारदात को अंजाम देकर बदमाश फरार हो गए। गोलियां लगने से युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। उसके परिजन उसे अस्पताल लेकर गए, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मृतक राजकुमार दलाल के परिजनों ने बताया कि उसकी किसी से दुश्मनी नहीं थी, वो गाड़ी लेकर रोजाना जिम जाता था। शुक्रवार सुबह भी वो जिम जा रहा था। इसी दौरान बदमाशों ने हमला कर दिया। जानकारी मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई। पुलिस को घटनास्थल से एक दर्जन गोलियों के खाली खोखे मिले। पुलिस का कहना है कि मामले की गहनता से जांच की जा रही है। जांच के बाद ही हत्या की वजह सामने आएगी।

राहुल गांधी ने रणथंभौर में की टाइगर सफारी

सवाई माधोपुर (एजेंसी)। कांग्रेस नेता और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी निजी यात्रा पर रणथंभौर में हैं। राहुल गांधी ने गुरुवार सुबह-शाम और शुक्रवार को सुबह लगातार टाइगर सफारी का लुत्फ उठाया। इस दौरान उन्हें लगातार तीनों सफारी में बाघ-बाघिन के दीदार हुए। जोन नंबर 2 में फिमेल टाइगर को शिकार करते देखा। राहुल गांधी ने गुरुवार सुबह जोन नंबर 3 के गूलर वन क्षेत्र में बाघिन सिद्धि के दीदार हुए। यहां शावक को स्वछंद घूमते देखकर राहुल गांधी खासे उत्साहित दिखाई दिए। गुरुवार शाम की पारी में जोन नंबर 2 में फीमेल टाइगर के दीदार किए। इस

दौरान उन्होंने बाघिन टी-84 एरोहेड व उसके शावकों की अठखेलियां देखी। राहुल गांधी ने शिवराज एनीकट वन क्षेत्र में बाघिन और उसके शावकों को शिकार का लुत्फ उठाता देखा। जिसे उन्होंने अपने कैमरे में कैद किया। वहीं शुक्रवार सुबह की पारी में राहुल गांधी ने रणथंभौर के जोन नंबर 2 और 3 में सफारी की। जहां उन्होंने जोन नंबर 2 पर रिद्धि व उसके शावक और जोन नंबर 3 में ऐरोहेड व उसके शावकों के दीदार किए। आज सुबह की पारी में टाइगर सफारी करने पहुंचे राहुल गांधी ने लोगों के साथ फोटो पर खिंचवाई इस दौरान आज सुबह की पारी में जब राहुल गांधी ने टाइगर पार्क के मैन गेट पर कांग्रेस के ब्लॉक अध्यक्ष छुट्टन लाल मीणा से मुलाकात की। उन्होंने करीब 2 मिनट बात करके फ़ोटो भी खिंचवाई।

वक्फ कानून के खिलाफ कोलकाता में सड़कों पर उतरे स्टूडेंट्स

नई दिल्ली (एजेंसी)। यह विरोध प्रदर्शन पीडीपी के महासचिव खुर्शीद आलम के नेतृत्व में किया गया। सैकड़ों पार्टी कार्यकर्ता श्रीनगर के शेर-ए-कश्मीर पार्क के पास पार्टी ऑफिस पर जमा हुए थे। नए वक्फ कानून के विरोध में पश्चिम बंगाल के कोलकाता में प्रदर्शन किया जा रहा है, ये प्रदर्शन आलिया यूनिवर्सिटी के छात्र कर रहे हैं। मुस्लिम संगठनों ने भी छात्रों का समर्थन किया है। बड़ी संख्या में लोग इस प्रदर्शन में जमा हुए हैं। इधर, जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी के कार्यकर्ताओं ने शुक्रवार सुबह विरोध प्रदर्शन किया। पुलिस ने पार्टी ऑफिस के बाहर ही बैरिकेड्स लगाकर

प्रदर्शनकारियों को रोक दिया।

यह विरोध प्रदर्शन पीडीपी के महासचिव खुर्शीद आलम के नेतृत्व में किया गया। पीडीपी कार्यकर्ता नए वक्फ कानून के विरोध में शहर के केंद्र की ओर मार्च करना चाहते थे, लेकिन पुलिस ने उन्हें इसकी इजाजत नहीं दी। दरअसल, ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड शुक्रवार से देशभर में वक्फ बचाव अभियान शुरू हो गया है है। इसका पहला फेज 07 जुलाई यानी 87 दिन तक चलेगा। इसमें वक्फ कानून के विरोध में 1 करोड़ हस्ताक्षर कराए जाएंगे। जो पीएम मोदी को भेजे जाएंगे। इसके बाद अगले फेज की रणनीति तय की जाएगी।

एमआईएमपीलबी महासचिव मौलाना फजलुर रहीम मुजद्दिदी ने वीडियो मैसेज जारी किया है। वीडियो में मुजद्दिदी ने सरकार पर सांप्रदायिक एजेंडा चलाने और धर्मनिरपेक्षता को कमजोर करने का आरोप लगाया है। उन्होंने वीडियो में कहा- यह अभियान वक्फ संपत्तियों की रक्षा और विधेयक को निरस्त करने की मांग को लेकर चलाया जा रहा है। एमआईएमपीलबी का मानना है कि यह विधेयक वक्फ संपत्तियों की प्रकृति और स्वायत्तता को नुकसान पहुंचाएगा, जिसे वे इस्लामी मूल्यों, शरीयत, धार्मिक स्वतंत्रता और भारतीय संविधान के खिलाफ मानते हैं। बोर्ड के मुताबिक आंदोलन तब तक चलेगा, जब तक विधेयक पूरी तरह निरस्त नहीं हो जाता।

सीएसके के कप्तान ऋतुराज गायकवाड़, एमएस धोनी संभालेंगे टीम की कप्तानी

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 में चेन्नई सुपर किंग्स का प्रदर्शन बेहद निराशाजनक रहा है। वहीं अब टीम को बड़ा झटका लगा है। दरअसल, सीएसके के कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ आईपीएल 2025 से बाहर हो गए हैं। गायकवाड़ कोहनी की चोट के कारण टूर्नामेंट से बाहर हुए हैं। उनकी जगह चेन्नई सुपर किंग्स की कप्तानी एमएस धोनी करते हुए नजर आएंगे। चेन्नई सुपर किंग्स के कोच स्टीफन फ्लेमिंग ने गुरुवार को इसकी पुष्टी की। हालांकि, ऐसा दूसरी बार हुआ है, जब बीच सीजन में धोनी को सीएसके की कमान संभालनी पड़ी है, इससे पहले आईपीएल 2022 में रविंद्र जडेजा की जगह धोनी ने टीम की जिम्मेदारी ली थी। वहीं कोच फ्लेमिंग ने गुरुवार को मीडिया को बताया कि, ऋतुराज गायकवाड़ कोहनी के फ्रेक्चर के कारण आईपीएल से बाहर हैं। एमएस धोनी कप्तान होंगे। गायकवाड़ को जोफ्रा आर्चर की गेंद पर चोट लगी थी। आईपीएल 2025 में सीएसके ने गायकवाड़ की कप्तानी में महज एक मुकाबला जीता है। चेन्नई सुपर किंग्स ने आईपीएल 2025 में अपने पहले मुकाबले में मुंबई इंडियंस को हराया था लेकिन उसके बाद से टीम ने लगातार चार मुकाबले गंवाए हैं।

कप्तानी के दौरान अलग ही अंदाज में नजर आते हैं धोनी-गांगुली

नई दिल्ली (एजेंसी)। नियमित कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ की कोहली में हुए फ्रेक्चर के बाद जहां एक बार फिर महेन्द्र सिंह धोनी को चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) की कप्तानी मिली है। वहीं भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली का भी मानना है कि धोनी का कप्तानी के दौरान अलग ही अंदाज देखने को मिलता है। इसलिए उन्हें अगर सीएसके की ओर से आगे भी खेलना है तो कप्तानी ही करनी चाहिये। गांगुली ने कहा कि 43 साल की उम्र में भी धोनी आसानी से बड़े शॉट खेल लेते हैं और ये उनकी खूबी है। वहीं सीएसके के लिए ये सत्र अच्छा नहीं रहा है और उसे पांच में से चार मैचों में हार का सामना करना पड़ा है। वहीं धोनी भी अब तक खेले मैचों में निचले क्रम पर उतरे हैं जिसपर कई सवाल भी उठे हैं।वहीं गांगुली ने एक कार्यक्रम में कहा,''मेरा यह मानना है कि अगर धोनी को सीएसके के लिये खेलना है तो उसे कप्तान ही बने रहना चाहिये कई कप्तानी करते हुए वह अधिक बेहतर प्रदर्शन करते हैं।'' गांगुली ने कहा, ''धोनी अभी भी छक्के लगा रहा है। हमने पिछले मैच में देखा। वह 43 साल का हो गया है, ऐसे में स्वाभाविक है कि वह वैसे नहीं खेल सकता जैसे 2005 में खेलता था। इससे मुझे लगता है कि उसके भीतर अभी भी छक्के लगाने की ताकत है।'' साथ ही कहा कि उसके अंदर खेल की समझ होने के साथ ही खेल का लंबा अनुभव भी है, ऐसे में वह वही करेगा जो टीम के लिये सही होगा।''

मैदान पर दिखी विराट कोहली की लापरवाही, फिल सॉल्ट को कराया रन आउट!

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2025 का 24वां मुकाबला आरसीबी और दिल्ली कैपिटल्स के बीच एम चिन्नास्वामी के स्टेडियम में खेला जा रहा है। टॉस गंवाकर आरसीबी इस मुकाबले में पहले बल्लेबाजी कर रही है। आरसीबी की ओर से विराट कोहली और फिल सॉल्ट मैदान पर आए। सॉल्ट ने आते ही हवाई फायर करना शुरु किया। दूसरी ओर विराट कोहली ने एक झोर संभाले रखा। आरसीबी ने 3 ओवर में 53 रन ठोक दिए। इस दौरान सॉल्ट 14 गेंदों पर 36 रन और कोहली 5 गेंदों पर 6 रन बनाकर खेल रहे थे। चौथा ओवर अक्षर पटेल करने आए। ओवर की 5वें गेंद पर सॉल्ट की पारी का दुखद अंत हुआ। बाउंड्री में डील रहे सॉल्ट रन आउट हुए। इस दौरान उनके और विराट कोहली के बीच तालमेल में कमी साफ देखने को मिली। 1 रन चुराने के चक्कर में सॉल्ट अपना विकेट गिरा बैठे। फिल सॉल्ट ने कवर के बाईं ओर एक पंच मारा और उन्होंने एक तेज सिंगल के लिए भागे, कोहली ने उन्हें वापस भेजा, लेकिन वे पीछे मुड़ते ही फिसल गए और पड़े। ऐसे में वह उठकर वापस क्रीज तक नहीं पहुंच सके। विप्रज निगम के शानदार थ्रो पर केएल राहुल ने गिल्लियां बिखेर दीं।

ओलंपिक से 75 किग्रा हटाए जाने के बाद 70 किग्रा वजन वर्ग में जा सकती है लवलीना बोरगोहेन

नई दिल्ली (एजेंसी)। टोक्यो ओलंपिक की पदक विजेता भारतीय मुक्केबाज लवलीना बोरगोहेन 70 किग्रा वर्ग में जा सकती हैं, क्योंकि अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) ने 2028 में लॉस एंजिल्स में होने वाले ओलंपिक खेलों के लिए उनके मौजूदा 75 किग्रा भार वर्ग को खत्म कर दिया है। आईओसी ने बुधवार को ओलंपिक 2028 के लिए कार्यक्रम और खिलाड़ियों के कोटा की घोषणा की। नए बदलाव के कारण लवलीना को या तो 70 किग्रा तक नीचे जाना होगा या 80 किग्रा से अधिक वजन वर्ग में अपना भाग्य आजमाना होगा। घटनाक्रम से हैरान लवलीना ने गुवाहाटी से पीटीआई से कहा,''यह मेरे लिए बिल्कुल नई जानकारी है। यह काफी चौंकाने वाली है। मुझे लगता है कि मुझे 70 किग्रा तक नीचे जाना होगा क्योंकि मेरे लिए 80 किग्रा से अधिक तक जाना मुश्किल होगा।'' उनकी निजी कोच प्रणामिका बोरा भी इस घटनाक्रम से हैरान थी लेकिन उन्होंने कहा कि फिटनेस और चिकित्सा मूल्यांकन के बाद ही नए वजन वर्ग को लेकरअंतिम फैसला किया जाएगा। बोरा ने कहा, '''इस खबर से मैं वास्तव में हैरान हूं। अभी किसी फैसले पर पहुंचना जल्दबाजी होगी। वह 70 और 80 दोनों वजन वर्गों में लड़ सकती है लेकिन हमें इस पर फैसला करने से पहले कुछ परीक्षण करने होंगे।''

वर्तमान में, बोरगोहेन का प्राकृतिक वजन 74 किलोग्राम है और बोरा ने कहा कि बहुत अधिक वजन कम करने से ताकत में कमी आ सकती है। पेरिस ओलंपिक के लिए बोरगोहेन के साथ यात्रा करने वाली बोरा ने कहा, ''फिलहाल उसका प्राकृतिक वजन 74 किलोग्राम है और बहुत अधिक वजन कम करने से उसकी ताकत कम हो सकती है। इसलिए हम देखेंगे कि उसे किस चीज से अधिक फायदा मिलता है।''

मुक्केबाजी को पिछले महीने ही 2028 ओलंपिक में शामिल करने की पुष्टि की गई थी। मुक्केबाजी में पहली बार पुरुषों और महिलाओं की समान संख्या (प्रत्येक में सात) शामिल होंगी। नई ओलंपिक महिला श्रेणियों में 51 किग्रा (फ्लाईवेट), 54 किग्रा (बैंथमवेट), 57 किग्रा (फेदरवेट), 60 किग्रा (लाइटवेट), 65 किग्रा (वेल्टरवेट), 70 किग्रा (लाइट मिडिलवेट) और 80 किग्रा से अधिक (हैवीवेट) शामिल हैं। ओलंपिक के लिए पुरुषों की नई वजन श्रेणियां 55 किग्रा (बैंथमवेट), 60 किग्रा (लाइटवेट), 65 किग्रा (वेल्टरवेट), 70 किग्रा (लाइट मिडिलवेट), 80 किग्रा (लाइट हैवीवेट), 90 किग्रा (हैवीवेट) और 90 किग्रा से अधिक (सुपर हैवीवेट) हैं।

के राहुल ने स्टेडियम में दिखाया वनमैन शो

नई दिल्ली (एजेंसी)। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) और दिल्ली कैपिटल्स (डीसी) के बीच हुए मुकाबले में दिल्ली को जीत मिली है। इस मैच में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु की हार का कारण खुद टीम रही है। अपने होमग्राउंड चिन्नास्वामी स्टेडियम में खेले गए इस मुकाबले में आरसीबी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए उन्होंने महज 18 गेंद में 50 रन जड़े।

मुकाबला शुरु होने पर मैच आरसीबी के पलड़े में लग रहा था और काफी सेट ता। फिर विराट कोहली और फिल सॉल्ट के बीच रन बनाते हुए रन बन रहे थे। दोनों अच्छी पार्टनरशिप की ओर बढ़ रहे थे मगर 17 गेंदों में 37 रन बनाने वाले फिल अचानक आउट हो गए। फिल के आउट होने पर आरसीबी का स्कोर 3.5 ओवर में 61/1 पर बना हुआ था।

इस विकेट के गिरने के बाद आरसीबी की कहानी आयाराम गयाराम जैसी हुई। आरसीबी आगे बढ़ते हुए 91 रन के स्कोर पर चार विकेट खो चुकी थी। इन विकटों में देवदत्त पडि?क्कल (1), विराट कोहली (22) लियाम लिविस्टोन (4) का विकेट शामिल रहा। आरसीबी का पांचवा विकेट जितेश शर्मा के रूप में गिरा जो तीन रन बनाकर पवेलियन लौटे। वहीं कप्तान रजत पाटीदार ने पारी को संभालने की कोशिश की। रजत पाटीगार ने 25 रन बनाए और छठा विकेट गंवा बैठे।

आरसीबी को क्रुणाल पंड्या और टिम डेविड ने बचाने की कोशिश की जिन्होंने पारी खत्म होने से पहले धमाकेदार बल्लेबाजी की और 18 व 37 रन बनाए। इस मैच में आरसीबी का मिडिल ऑर्डर बुरी तरह से फेल हुआ। आरसीबी को परेशान करने में दिल्ली के स्पिनर कुलदीप यादव और विप्राज निगम ने शानदार गेंदबाजी की। कुलदीप ने इस मैच में दो विकेट चटकाए और 17 रन दिए। वहीं निगम ने दो विकेट लिए।

आरसीबी ने इस मैच में 20 ओवर में 163 रन बनाए। दिल्ली अब रन चेज करने उतरी। शुरुआत में लगा कि बेंगलुरु इस मैच को आसानी से जीत लेगी और दिल्ली को टारगेट पाने नहीं देगी। मैच में फाफ डु प्लेसि?स महज दो रन बनाकर यश दयाल का शिकार हो गए। जेक फ्रेजर मैकगर्क (7) और इम्पैक्ट सब अभि?षेक पोरेल (7) भी भुवनेश्वर कुमार का शिकार हुए। दिल्ली के तीन विकेट काफी कम स्कोर पर पवेलियन पहुंच चुके थे। पांच ओवर में दिल्ली कैपिटल्स की 30 रन बनाकर तीन विकेट गंवा चुकी थी। इसके बाद अक्षर पटेल भी दम नहीं दिखा सके और महज 15 रन बनाकर पवेलियन लौटे। 58 रन पर दिल्ली चार विकेट गंवा चुकी थी।

इसके बाद केएल राहुल पिच पर आए और उन्होंने 93 रनों की धमाकेदार पारी खेली। मैच को संभालने के लिए उनका साथ ट्रि?स्टन स्टब्स(38) ने दिया। दोनों के बीच 111 रनों की मैच विनिंग पार्टनरशिप देखने को मिली थी।

दोनों की पार्टनरशिप की बदौलत इस पूरे मैच का रुख बदल गया। आरसीबी के गेंदबाज इस पार्टनरशिप को तोड़ नहीं सके और मैच उनके हाथ से निकल गया। बता दें कि केएल राहुल को दिल्ली कैपिटल्स ने 14 करोड़ रुपये में खरीदा था और इस बार वो जबरदस्त फॉर्म में बने हुए है। तीन मुकाबलों में उनके बल्ले से 185 रन निकले है। चेन्नई के खिलाफ भी केएल राहुल ने मैच विनिंग पारी खेली थी।

विराट कोहली ने रचा इतिहास, सबसे ज्यादा बाउंड्री लगाने के मामले में पहुंचे टॉप पर

नई दिल्ली (एजेंसी)। विराट कोहली ने आईपीएल 2025 में इतिहास रच दिया है। उन्होंने दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ गुरुवार को 22 रनों की पारी खेली। कोहली ने इस दौरान आरसीबी के लिए बल्लेबाजी करते हुए दो छक्के और एक चौका जड़ा। कोहली ने इसकी बदौलत आईपीएल में 1000 बाउंड्री का आंकड़ा छू लिया है वे ऐसा करने वाले आईपीएल इतिहास के पहले खिलाड़ी हैं।

कोहली आईपीएल में सिर्फ आरसीबी के लिए ही मैच खेले हैं। उन्होंने 2008 से अभी तक 248 मैच खेले हैं। इस दौरान 721 चौके और 279 छक्के लगाए हैं। विराट ने इस तरह एक हजार बाउंड्री पूरी कर ली है। वे ऐसा करने वाले इतिहास के पहले खिलाड़ी हैं। इस लिस्ट में दूसरे नंबर पर शिखर धवन हैं जिन्होंने आईपीएल में 920 बाउंड्री लगाई हैं। हालांकि, वे सबसे ज्यादा चौके लगाने के मामले में विराट से आगे हैं।

आईपीएल में सबसे ज्यादा बाउंड्री लगाने वाले खिलाड़ियों टॉप पर पांच खिलाड़ियों की लिस्ट में तीन भारतीय खिलाड़ी हैं। कोहली और धवन के साथ-साथ इस लिस्ट में रोहित शर्मा भी शामिल हैं। रोहित ने अभी तक 256 मैच खेले हैं। उन्होंने इस दौरान 282 छक्केके और 603 चौके जड़े हैं।

पीएसएल से पहले मोहम्मद रिजवान ने कही ऐसी बात, सोशल मीडिया पर लोग लेने लगे मजे

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट और उसके क्रिकेटर्स किसी ना किसी कारण सुर्खियों में रहते ही हैं। पाकिस्तान के खिलाड़ी कभी अपने खराब प्रदर्शन के कारण तो कभी अपनी खराब इंग्लिश के कारण सोशल मीडिया पर फैंस के निशाने पर बने रहते हैं। इन्हीं में एक हैं पाकिस्तान के कप्तान मोहम्मद रिजवान जिनका अक्सर सोशल मीडिया पर मजाक उड़ता है। अब उनका एक और वीडियो सामने आया है। इसमें वो पाकिस्तान सुपर लीग शुरू होने से पहले मुल्तान सुल्तान्स टीम से बातचीत कर रहे हैं। इस वीडियो को मुल्तान सुल्तान्स के सोशल मीडिया पर शेयर किया गया है। दरअसल, वीडियो के शुरू होते ही रिजवान कहते हैं कि, कैमरामैन फोकस करो। सभी लोग फोकस करें। आगे वह कहते हैं कि हमें यहां पर केवल चैंपियन वाली बातें करनी हैं। उनकी इस बात को

लेकर भी लोग उनके खूब मजे ले रहे हैं। इस वीडियो में रिजवान मुल्तान सुल्तान्स के खिलाड़ियों को मोटिवेट कर रहे हैं। वह कहते हैं कि यहां मौजूदा सभी खिलाड़ी हमारी स्क्वॉड हैं। चाहे खिलाड़ी छोटा हो या बड़ा, सभी हमारे लिए इम्पॉर्टेंट हैं। आगे वह कहते हैं कि मेरी बातों का ध्यान रखें। ये टूर्नामेंट एक महीने का है। एक महीने में खत्म हो जाएगा। लेकिन हमारी सोच इससे आगे की होनी चाहिए। रिजवान कहते हैं कि आज पहला दिन है, लेकिन हमारी बातें फाइनल के दिन के लिए होनी चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि हमारे बीच जितनी भी बातें होंगी, पॉजिटिव बातें होंगी। रिजवान ने ये भी कहा कि आप जो भी प्लानिंग करें वह फाइनल के बाद के लिए करें। असल में रिजवान सारी बातें उर्दू में कह रहे हैं। जबकि वहां पर मौजूद खिलाड़ियों में कुछ विदेशी खिलाड़ी भी मौजूद हैं। विदेशी खिलाड़ियों और सपोर्ट स्टाफ को लेकर रिजवान कहते हैं कि इन्हें हम मेहमान की तरह से रखेंगे। चाहे ग्राउंड हो या फिर बाहर हो, इन्हें हम कोई भी तकलीफ नहीं होने देंगे। वीडियो को देखकर लग रहा है कि, विदेशी खिलाड़ियों को रिजवान का कहा कुछ भी समझ में नहीं आया। पूरी स्पिच के बाद रिजवान वहां मौजूद डेविड विली से पूछते हैं कि क्या उन्हें बात समझ आई? जिसके जवाब में विली जो रिएक्शन देते हैं वह खुद ही सबकुछ बयां करता है।

पृथ्वी शॉ आईपीएल 2025 में आ सकते हैं नजर

नई दिल्ली (एजेंसी)। चेन्नई सुपर किंग्स को एक बड़ा झटका लगा। दरअसल, टीम के हेड कोच ने पुष्टि की है कि टीम के कप्तान ऋतुराज गायकवाड़ कोहनी के फ्रैक्चर के कारण आईपीएल 2025 से बाहर हो गए हैं। 28 वर्षीय दाएं हाथ के बल्लेबाज को 30 मार्च को गुवाहाटी में खेले गए चेन्नई सुपर किंग्स और राजस्थान रॉयल्स आईपीएल 2025 मैच के दौरान वह चोटिल हो गए थे। अब बाकी बचे मैचों में महेंद्र सिंह धोनी टीम की कप्तानी करते नजर आएंगे। वहीं कहा जा रहा है कि, ऋतुराज की जगह सीएसके में पृथ्वी शॉ को मौका मिल सकता है। फिलहाल, पृथ्वी शॉ आईपीएल 2025 मेगा नीलामी में अनसोल्ड रहे।

चेन्नई सुपर किंग्स एक ऐसे बल्लेबाज को अपनी टीम में शामिल करना चाहेगी, जो गायकवाड़ की जगह ले सके। गायकवाड़ सीएसके के लिए एक धाकड़ बल्लेबाज थे। उन्होंने कई सीजन में अपनी टीम केलिए बेहतरीन प्रदर्शन

किया है। गायकवाड़ की जगह लेने के लिए भारत के तीन खिलाड़ियों की चर्चा जोरों पर है। इनमें से एक नाम पृथ्वी शॉ का भी है। पृथ्वी शॉ लगातार टीम इंडिया के सेटअप से बाहर चल रहे हैं और आईपीएल की मेगा नीलामी में भी उनको कोई खरीददार नहीं मिला है।

पृथ्वी शॉ- पृथ्वी शॉ को आईपीएल 2025 की मेगा नीलामी में कोई खरीदार नहीं मिला। लेकिन वह गायकवाड़ के प्रतिस्थापन के रूप में अब चेन्नई सुपर किंग्स में शामिल हो सकते हैं। मुंबई के 25 वर्षीय दाएं हाथ के सलामी बल्लेबाज आईपीएल 2018 से 2024 तक दिल्ली कैपिटल्स का हिस्सा थे और अब तक खेले गए 79 आईपीएल मैचों में उनके नाम 1892 रन हैं। भारत के पूर्व अंडर-19 कप्तान एक आक्रामक बल्लेबाज हैं जो आईपीएल 2025 में चेन्नई स्थित फ्रैंचाइजी को धमाकेदार शुरुआत दे सकते हैं।

मयंक अग्रवाल- मयंक आईपीएल में आरसीबी, दिल्ली कैपिटल्स, राइजिंग पुणे सुपरजायंट्स, पंजाब किंग्स और एसआरएच के लिए खेल चुके हैं। उन्होंने आईपीएल 2022 में पीबीकेएस के कप्तान के रूप में भी काम किया। अब तक खेले गए 127 आईपीएल मैचों में कर्नाटक के 34 वर्षीय दाएं हाथ के बल्लेबाज के नाम 2661 रन हैं। गायकवाड़ की तरह वह पारी की शुरुआत करने के साथ-साथ नंबर 3 पर बल्लेबाजी भी कर सकते हैं। आयुष म्हात्रे- आयुष मुंबई के 17 वर्षीय बल्लेबाज हैं। हाल ही में सीएसके फ्रेंचाइजी ने उन्हें मिड-सीजन ट्रायल के लिए बुलाया था। जिससे गायकवाड़ के प्रतिस्थापना केरूप में उनके टीम में शामिल होने की संभावना बढ़ गई है। इस युवा खिलाड़ी ने अब तक 9 प्रथम श्रेणी और सात लिस्ट ए मैच खेले हैं।

सांसद की बहू की कार से टकराए युवक की मौत, परिजनों ने घर में बाहर शव रख किया चक्काजाम

पूर्व विधायक ने लगाए असंवेदनशीलता के आरोप

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। सीधी सांसद डॉ. राजेश मिश्रा की बहू डॉ. बिना मिश्रा की कार से टकराकर गंभीर रूप से घायल हुए युवक की गुरुवार रात संजय गांधी अस्पताल रीवा में मौत हो गई। अनिल द्विवेदी निवासी अकोरी गांव को 2 अप्रैल को पडेनिया गांव के पास कार ने टक्कर मार दी थी। मामले में पूर्व भाजपा विधायक केदारनाथ शुक्ल ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर सांसद की बहू पर असंवेदनशीलता का आरोप लगाया है। घटना 2 अप्रैल की है। सीधी से कॉलेज से पढ़ाई करके लौट रहे अनिल द्विवेदी निवासी अकोरी गांव को पडेनिया के पास पीछे से आ रही कार ने टक्कर मार दी। यह कार सांसद राजेश मिश्रा के बेटे अनूप मिश्रा की पत्नी के नाम पर रजिस्टर्ड बताई गई है। अनिल के चाचा नागेन्द्र द्विवेदी ने आरोप लगाया कि टक्कर के बाद सांसद की बहू मौके से सीधे घर चली गईं, जबकि घायल युवक सड़क पर तड़पता रहा। परिजनों ने अनिल को पहले जिला अस्पताल, फिर जबलपुर और नागपुर तक इलाज के लिए ले गए। नागपुर में हालत में सुधार न होने पर चार दिन पहले उसे रीवा के संजय गांधी अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां गुरुवार रात को उसकी मौत हो गई।

सांसद के बेटे अनूप मिश्रा ने स्पष्टीकरण देते हुए कहा कि दुर्घटना के समय उनकी पत्नी कार नहीं चला रही थीं। उनका पैर फ्रैक्चर होने के कारण वह पिछली सीट पर बैठी थीं और कार ड्राइवर चला रहा था। उन्होंने बताया कि हादसे के बाद घायल को उनके नर्सिंग होम लाया गया था और फिर सिटी स्केन के लिए जिला अस्पताल भेजा गया।

इस बीच पूर्व विधायक केदारनाथ शुक्ला ने सोशल मीडिया पर पोस्ट कर सांसद की बहू पर असंवेदनशीलता का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा कि घटना के बाद जिस संवेदनशीलता की जरूरत थी, वह नहीं दिखी।

आक्रोशित परिजन शुक्रवार को रीवा के संजय गांधी अस्पताल से शव लेकर सीधी रवाना हुए। वहां सांसद राजेश मिश्रा के आवास के बाहर बीच सड़क शव रखकर परिजनों ने चक्का जाम कर दिया। परिजन पूरे मामले में कार्रवाई और न्याय की मांग कर रहे हैं। परिजनों ने शव का अंतिम संस्कार करने से भी इनकार कर दिया।

अज्ञात वाहन की टक्कर से बाइक सवार दो की मौत, एक घायल

रीवा से लौट रहे थे घर, झांझर गांव के पास हुआ हादसा

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में झांझर गांव के पास अज्ञात वाहन ने मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी। हादसे में दो युवकों की मौत हो गई, जबकि एक गंभीर रूप से घायल है। हादसा शुक्रवार दोपहर साढ़े 3 बजे रामपुर बघेलान थाना क्षेत्र में हुआ। तीनों युवक एक ही मोटरसाइकिल पर रीवा से अपने गांव सिजहटा लौट रहे थे। झांझर गांव के पास सामने से आ रहे भारी वाहन ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि तीनों युवक सड़क पर गिर गए।

दो युवकों की मौके पर हुई मौत: राहगीरों ने 108 एंबुलेंस को सूचना दी। घायलों को जिला अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टरों ने जांच के बाद दो युवकों को मृत घोषित कर दिया। मृतकों में से एक की पहचान 18 साल के करण कोल के रूप में हुई है। वो सिजहाटा का रहने वाला था। दूसरे मृतक की पहचान अभी नहीं हो पाई है।

एक युवक का इलाज जारी: घायल युवक की पहचान सिजहाटा निवासी अमित रावत(25) के रूप में हुई है। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना की सूचना मिलते ही एक मृतक के परिजन अस्पताल पहुंच गए। रामपुर बघेलान थाना पुलिस अज्ञात वाहन की तलाश कर रही है।

कन्या शिक्षा परिसर में प्रवेश के लिए आवेदन 15 तक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जनजातीय कार्य विभाग द्वारा शासकीय कन्या शिक्षा परिसर का संचालन किया जा रहा है। इसमें शिक्षा सत्र 2025-26 के लिए अनुसूचित जनजाति की छात्राओं को कक्षा सातवी और कक्षा नौंवी में प्रवेश का अवसर दिया रहा है। इसके लिए आवेदन 15 अप्रैल तक कार्यालयीन समय में कन्या शिक्षा परिसर में जमा किए जा सकते हैं। इस संबंध में प्राचार्य ने बताया कि अनुसूचित जनजाति की छात्राओं के लिए कक्षा सात में 19 सीटें तथा कक्षा 9 में 16 सीटें रिक्त हैं। आवेदन पत्र के साथ जन्म प्रमाण पत्र, हितग्राही प्रोफाइल पंजीयन, समग्र आईडी, पासपोर्ट आकार की 6 फोटो तथा जाति प्रमाण पत्र प्रस्तुत करना आवश्यक होगा। आवेदन पत्र के साथ निवास प्रमाण पत्र एवं पिछली कक्षा की अंकसूची की छायाप्रति, आधार कार्ड, बैंक पासबुक के प्रथम पेज की छायाप्रति तथा अपार आईडी प्रस्तुत करना आवश्यक है। इसकी प्रवेश परीक्षा 16 अप्रैल को दोपहर 12 बजे से 2 बजे तक कन्या शिक्षा परिसर रीवा में आयोजित की जाएगी। परीक्षा में मेरिट सूची के आधार पर छात्राओं को प्रवेश दिया जाएगा।

कमिश्नर ने ललितपुर सिंगरौली रेलवे लाइन में सतना, रीवा, सीधी और सिंगरौली में चल रहे कार्यों की समीक्षा की

रेलवे परियोजना के निर्माण कार्यों में तेजी लाने के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित बैठक में कमिश्नर बीएस जामोद ने ललितपुर सिंगरौली रेलवे लाइन में सतना, रीवा, सीधी और सिंगरौली में चल रहे कार्यों की समीक्षा की। कमिश्नर ने कहा कि संभाग के सभी जिलों में भू अर्जन का कार्य लगभग पूरा हो गया है। न्यायालयीन प्रकरण अथवा अन्य कारणों से जो प्रकरण शेष हैं उनका भी निराकरण किया जा रहा है। सभी कलेक्टर भू अर्जन प्रकरणों के निराकरण की हर सप्ताह समीक्षा करें। शासन द्वारा निर्धारित प्रक्रिया का पालन करते हुए भू अर्जन की कार्यवाही पूरी करें। भू अर्जन करते समय विस्थापित परिवारों के हितों का भी पूरा ध्यान रखें। निर्माण कार्यों के लिए जमीन प्राप्त होने के बाद रेलवे तत्काल उस पर निर्माण कार्य शुरू करे। निर्माण कार्य में देरी होने से कई तरह की कठिनाईयाँ उत्पन्न हो जाती हैं। रीवा से बघवार तक रेलवे लाइन बिछाने का कार्य पूरा हो गया है। सीधी जिले में शेष क्षेत्र में लाइन बिछाने का कार्य तेजी से करें।

कमिश्नर ने कहा कि मुआवजा वितरण के बाद भी यदि निर्माण कार्यों में कोई बाधा डालता है तो राजस्व अधिकारी मौके पर जाकर उसका निराकरण करें। रेलवे के अधिकारी तथा राजस्व अधिकारी समन्वय के साथ परियोजना के निर्माण कार्यों को पूरा कराएं। सीधी जिले के प्रकरणों की समीक्षा करते हुए कमिश्नर ने कहा कि जो प्रकरण न्यायालय में दर्ज हैं उन्हें लोक अदालत के माध्यम से निराकृत करने का प्रयास करें। भू अर्जन से प्रभावितों से सतत संपर्क करके लंबित प्रकरणों का निराकरण कराएं। राजस्व अधिकारियों ने भू अर्जन में बहुत अच्छा कार्य किया है। कमिश्नर ने सतना जिले के निर्माण कार्यों की समीक्षा करते हुए कहा कि नागौद तहसील में लंबित भू अर्जन के प्रकरणों में 30 दिन में मुआवजा राशि का वितरण कराएं। रीवा-सतना रेलवे लाइन के दोहरीकरण के भू अर्जन प्रकरणों में सात दिवस में मुआवजा का वितरण करें। ग्राम सड़वा, गंगवरिया और विकरा में भू अर्जन की कार्यवाही तत्परता से करें। कमिश्नर ने सिंगरौली जिले के प्रकरणों की समीक्षा करते हुए कहा कि पूरी पारदर्शिता के साथ भू अर्जन के प्रकरणों का निराकरण करें। कमिश्नर ने सभी कलेक्टरों को खाद्य सुरक्षा योजना के हितग्राहियों की ई केवाईसी 20 अप्रैल तक पूरी कराने के निर्देश दिए।

बैठक में कलेक्टर सीधी स्वरोचिष सोमवंशी ने बताया कि भू अर्जन के कारण रेलवे निर्माण कार्य में कहीं भी बाधा नहीं है। भू अर्जन से जुड़े प्रकरणों पर तत्परता से कार्यवाही की जा रही है। कलेक्टर ने ग्राम झांझ, रायखोर, पड़खुरी पवाई, पटेहरा, हर्दिहा पवाई, झलवार, ममदर, रघुनाथपुर, कोतरकला, नौढ़िया, मधुरी कोठार सहित विभिन्न ग्रामों के भू अर्जन की ग्रामवार जानकारी दी। वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से कलेक्टर सिंगरौली चन्द्रशेखर शुक्ला ने बताया कि चितरंगी तहसील तथा देवसर तहसील में तैयार मुआवजा प्रकरणों पर तत्परता से कार्यवाही की जा रही है। कई स्थानों पर केवल मुआवजे के लिए खसरे में मकानों का उल्लेख किया गया है। इनका मौके पर सत्यापन करके मुआवजा तैयार किया जा रहा है। सत्यापन पूरा होने के बाद मुआवजा राशि का वितरण किया जाएगा। खसरे में असत्य जानकारी दर्ज करने वालों के विरूद्ध कार्यवाही भी की जा रही है। वीडियो कान्फ्रेंसिंग से बैठक में शामिल कलेक्टर सतना एस सतीश कुमार ने कहा कि रीवा-सतना लाइन दोहरीकरण का मुआवजा 30 अप्रैल के बाद वितरित किया जाएगा। नागौद तहसील में लंबित 12.5 करोड़ का मुआजवजा शिविर लगाकर सात दिवस में भुगतान कर दिया जाएगा। बैठक में सीधी जिले के सभी एसडीएम, संयुक्त आयुक्त राजस्व श्रेयस गोखले, संयुक्त आयुक्त दिव्या त्रिपाठी, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सीधी अरविंद श्रीवास्तव, रेलवे के अधिकारी जीएस मीणा, सुनील प्रजापति, आरके स्वाई, इन्द्रजीत वर्मा तथा मानसिंह मीणा उपस्थित रहे।

अत्यधिक गर्मी एवं लू से बचने के लिए नागरिक अपनायें सावधानियां

उप मुख्यमंत्री राजेन्द शुक्ल ने स्वास्थ्य अमले को तैयारियों के लिए निर्देश ज़ारी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने राज्य मंल बढ़ती गर्मी ओंर लू की गंभीरता को देखते हुए नागरिकों से अपील की है कि वे सतर्क रहें और स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी निर्देशों का पूरी तरह पालन करें। उन्होंने कहा कि ग्रीष्मकाल के समय में सभी नागरिकों, विशेष रूप से बच्चों, बुजुर्गों, गर्भवती महिलाओं और बीमार व्यक्तियों की सुरक्षा हमारी प्राथमिकता है। सरकार और प्रशासन पूरी तरह सतर्क और तैयार हैं। समस्त स्वास्थ्य संस्थानों को आवश्यक तैयारियों के लिए निर्देशित कर दिया गया है। उन्होंने अपील की है कि सभी नागरिक सावधानियों का अवश्य पालन करें। प्रबंध संचालक, एनएचएम डॉ. सलोनी सिडाना प्रदेश के सभी जिलों के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, सिविल सर्जन और अस्पताल अधीक्षकों को गर्मी के दृष्टिगत स्वास्थ्य सुरक्षा के लिए आवश्यक तैयारियों और जागरूकता के निर्देश दिए हैं। उन्होंने गर्मी के मौसम में भारत सरकार द्वारा हीट रिलेटेड इलनेस से बचाव के लिए दिशा-निर्देश को जिला व स्वास्थ्य संस्थानों को अनिवार्य रूप से उपलब्ध कराने के लिए कहा है। साथ ही जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक में इन पर चर्चा कर संबंधित विभाग प्रमुखों को भी अवगत कराने के निर्देश दिए गये हैं। उन्होंने जनसामान्य को जागरूक करने और सभी स्वास्थ्य संस्थाओं में रोगियों को एचआरआई से बचाव के उपायों के प्रति जागरूक करने के निर्देश दिए हैं।

गर्मी के मौसम में शरीर में पानी की कमी होना आम समस्या है, जिससे गंभीर बीमारियां उत्पन्न हो सकती हैं। नागरिको दिनभर पर्याप्त मात्रा में पानी पीते रहें, भले ही प्यास न लगे। यात्रा करते समय पानी अवश्य साथ रखें। ओआरएस, नींबू पानी, लस्सी, छाछ, फलों के रस (थोड़ा नमक मिलाकर) जैसे घरेलू पेयों का सेवन लाभकारी होता है। तरबूज, खरबूजा, संतरा, अंगूर, अनानास, खीरा जैसी मौसमी फल-सब्ज़ियों का सेवन शरीर में तरलता बनाए रखने में सहायक होता है। धूप में निकलते समय शरीर को पूरी तरह ढंकना बेहद जरूरी है। हल्के रंग के, सूती और ढीले कपड़े पहनें ताकि गर्मी से राहत मिल सके।

सिर को टोपी, छतरी, गमछा या पारंपरिक उपायों से ढकना चाहिए। नंगे पांव धूप में जाना भी हानिकारक हो सकता है, इसलिए चप्पल या जूते पहनना अनिवार्य है। जहां तक हो सके, दोपहर के समय घर के अंदर या छांव में रहें। घर में ठंडी हवा का संचार बना रहे, इसके लिए दिन में खिड़कियां और पर्दे बंद रखें और रात में उन्हें खोल दें। यदि बाहर जाना ही हो, तो सुबह या शाम के ठंडे समय में ही जाएं। गर्मी के समय बाहरी गतिविधियों को सीमित करना आवश्यक है।

सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों में लापरवाही पर 6 को नोटिस

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर मऊगंज संजय कुमार जैन द्वारा सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण की हर सप्ताह समीक्षा की जा रही है। प्रकरणों के निराकरण में लापरवाही बरतने पर कलेक्टर ने विभिन्न विभागों के 6 अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। जारी अलग-अलग नोटिस के अनुसार प्रभारी सीईओ जनपद पंचायत मऊगंज रामकुशल मिश्रा को 50 दिन से अधिक समय से लंबित 108 तथा मार्च माह में दर्ज 226 शिकायतों का निराकरण न करने पर नोटिस दिया गया है। जिला आपूर्ति नियंत्रक कमलेश तांडेकर को खाद्य विभाग के ग्रेड बी में रहने तथा 50 दिन से अधिक समय से लंबित 334 एवं मार्च माह की 195 शिकायतों पर कार्यवाही न करने पर नोटिस दिया गया है।

कलेक्टर ने मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत नईगढ़ी कल्पना यादव को मार्च माह की 144 शिकायतों तथा 50 दिन से अधिक समय से लंबित 52 शिकायतों का निराकरण न करने एवं जनपद का ग्रेड सी में होने के कारण नोटिस दिया है। कार्यपालन यंत्री पीएचई संजय पाण्डेय को सीएम हेल्पलाइन में 50 दिन से अधिक समय से लंबित 115 प्रकरणों पर कार्यवाही न करने के कारण नोटिस दिया गया है। उपायुक्त सहकारिता लेखराम द्विवेदी को विभागीय ग्रेडिंग वेटेज स्कोर 51 रहने तथा विभाग के डी श्रेणी में रहने के कारण नोटिस दिया गया है। प्रभारी सीईओ जनपद पंचायत कमलेश पुरी को जनपद ग्रेडिंग वेटेज स्कोर 61.42 रहने तथा ग्रेड सी में रहने एवं 50 दिन से अधिक समय से लंबित 102 शिकायतों पर कार्यवाही न करने के कारण नोटिस दिया गया है। कलेक्टर ने अधिकारियों को 10 दिवस में सभी लंबित प्रकरणों के निराकरण के निर्देश दिए हैं।

कलेक्टर मऊगंज ने दो तहसीलदारों को दिया नोटिस

कलेक्टर मऊगंज संजय कुमार जैन द्वारा सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण में लापरवाही बरतने पर दो तहसीलदारों को कारण बताओ नोटिस दिया है। जारी अलग-अलग नोटिस के अनुसार तहसीलदार नईगढ़ी मणिराज सिंह बागरी को तहसील में 50 दिन से अधिक समय से 267 शिकायतों तथा मार्च माह में दर्ज 301 शिकायतों के लंबित रहने पर नोटिस दिया गया है। तहसीलदार मऊगंज सौरव मरावी को 50 दिन से अधिक समय की 433 शिकायतों तथा मार्च माह में दर्ज 326 शिकायतों पर कार्यवाही न करने के कारण नोटिस दिया गया है। कलेक्टर ने 10 दिवस में सभी लंबित प्रकरणों का निराकरण करके प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के निर्देश दिए हैं। समय सीमा में प्रकरणों का निराकरण न होने पर एक पक्षीय अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी।

ज्ञानोदय विद्यालय में प्रवेश के लिए आवेदन 21 तक

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जनजातीय कार्य विभाग द्वारा संचालित शासकीय ज्ञानोदय विद्यालय रीवा में शिक्षा सत्र 2024-25 में कक्षा 7वीं, 8वीं और 9वीं में प्रवेश के लिए 21 अप्रैल को शाम 4 बजे तक आवेदन किया जा सकता है। स्कूल में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के लिए कक्षा 7वीं में बालकों के लिए 12 तथा बालिकाओं के लिए 10, कक्षा 8वीं में बालकों के लिए 4 तथा बालिकाओं के लिए 16 एवं कक्षा 9वीं में बालकों के लिए 3 तथा बालिकाओं के लिए एक स्थान रिक्त है। सामान्य श्रेणी के बीपीएल परिवार, अन्य पिछड़ावर्ग एवं अनुसूचित जनजाति के लिए कक्षा 7वीं में बालकों के लिए 2 तथा बालिकाओं के लिए 4, कक्षा 8वीं में बालक के लिए एक एवं बालिकाओं के लिए 2 एवं कक्षा 9वीं में केवल बालिकाओं के लिए 4 स्थान रिक्त हैं। रिक्त स्थानों में परिवर्तन हो सकता है। इस संबंध में प्राचार्य ने बताया कि आवेदन 21 अप्रैल को शाम 4 बजे तक कार्यालय में जमा होना अनिवार्य है। इसकी प्रवेश परीक्षा 23 अप्रैल को सुबह 11 बजे से दोपहर एक बजे तक ज्ञानोदय विद्यालय में आयोजित की जाएगी। प्रवेश परीक्षा की मेरिट के अनुसार विद्यार्थी का चयन किया जाएगा। प्रवेश के लिए बी ग्रेड अथवा 60 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी ही आवेदन कर सकेंगे।

चाट खाने से बिगड़ी तबीयत, खाद्य विभाग ने मारा छापा, लिये सैंपल

सतना में दो रेस्टोरेंट से लिए सैंपल; अधिकारी बोले-रिपोर्ट के बाद होगी कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, सतना (निप्र)। सतना में खाद्य विभाग की टीम ने शुक्रवार को स्टेशन रोड स्थित दो रेस्टोरेंट पर छापामार कार्रवाई की। इस दौरान टीम ने खाने के सैंपल लिए और रेस्टोरेंट की साफ-सफाई भी देखी। अधिकारियों ने बताया कि रिपोर्ट आने के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी।

खाद्य सुरक्षा अधिकारी शीतल सिंह की टीम ने श्रीनाथ पाव भाजी और चाट सेंटर का निरीक्षण किया। टीम ने रेस्टोरेंट से खाद्य सामग्री के सैंपल लिए। साथ ही किचन की साफ-सफाई की भी जांच की।

दरअसल गुरुवार को कुछ लोगों की तबीयत चाट खाने के बाद खराब हो गई थी, विभाग को इस संबंध में लिखित शिकायत मिली थी। उनकी शिकायत पर खाद्य सुरक्षा अधिकारी शीतल सिंह के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया।

अधिकारियों ने सैंपल जांच के लिए भेज दिए हैं। छापेमारी से क्षेत्र के अन्य दुकानदारों में हड़कंप मच गया है।

दिवंगत निरीक्षक की पत्नी को एक करोड़ रुपए की आर्थिक सहायता

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। पुलिस महानिरीक्षक रीवा गौरव राजपूत ने रीवा जिले में पदस्थ सहायक उपनिरीक्षक स्वर्गीय फूलचंद्र रजक की सड़क दुर्घटना में दुखद मृत्यु के उपरांत उनकी पत्नी प्रेमा रजक को एक करोड़ रुपए की आर्थिक सहायता राशि प्रदान की। यह सहायता राशि स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के पुलिस सैलरी पैकेज के अंतर्गत दी गई है। रीवा रेंज के पुलिस महानिरीक्षक ने प्रेमा रजक को रीवा पुलिस कार्यालय में बुलाकर एक करोड़ की राशि का चेक सौंपा। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक विवेक सिंह तथा पुलिस विभाग के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर राजपूत ने कहा कि पुलिस विभाग अपने कर्मचारियों और उनके परिवारों की सुरक्षा एवं कल्याण के लिए सदैव तत्पर है। उन्होंने स्वर्गीय फूलचंद्र रजक की सेवाओं को याद करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की और परिवार को इस कठिन समय में धैर्य बनाए रखने की बात कही। एसबीआई के पुलिस सैलरी पैकेज के अंतर्गत कार्यरत पुलिसकर्मियों को सड़क दुर्घटना जैसी घटनाओं में बीमा सुरक्षा उपलब्ध कराई जाती है, जिससे उनके परिवार को आर्थिक रूप से सहायता मिल सके। प्रेमा रजक ने इस सहयोग के लिए पुलिस विभाग और बैंक के प्रति आभार व्यक्त किया। यह सहायता राशि उनके और परिवार के लिए एक नई आशा की किरण साबित होगी। इस पहल से पुलिसकर्मियों को यह संदेश भी गया कि उनकी सेवा और बलिदान को विभाग द्वारा ससम्मान स्वीकार किया जाता है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया प्रकाशन रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय प्रभात बिहार कॉलोनी सतना से प्रकाशित, संपादक संदीप द्विवेदी आर.एन.आई नं.एमपीएचआईएन/2021/81683
प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9407132714, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार, सभी विवादो का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।